चन्दामामा
जनवरी १९८४

संचारण कैसे फासला मिटाता है

मुझे कितनी खुशी हो रही है, हम एक दूसरे से बातचीत कर सकते हैं, जीवन। यदि तुम मुझे यह सब न सिखलाते तो मैं बस.......?

तुम पेड़ पर ही चढ़े रहते, जमीन पर आने से भी डरते। तुम अभी भी केले को पहले छीले बिना ही खा जाते। और लोगों पर नारियल फेंकते रहते...।

और बिना संचार-व्यवस्था के तुम...?

हनु माफ करना, हम भी नासमझ बन्दरों की तरह मूर्ख रहते। जैसे कि लाखों-करोड़ों वर्ष पहले हम वास्तव में थे।

तुम्हारा मतलब है संचार-व्यवस्था ने ही मानव जाति को बुद्धिमान बनाया?

निस्संदेह। थोड़ा बहुत जो भी हम सीखते जाते, उसे हम अपनी संचारण योग्यता के बल पर दूसरों तक पहुंचाने में सफल हुए। पहले मानव को ही लो, जिसने संयोग से दो पत्थरों को आपस में रगड़ा और आग पैदा हो गयी थी।

वह तो निश्चय ही बेहद डर गया होगा।

हां, पर एक बार बात समझ में आ जाने पर, उसने दूसरों से इसे बताया, वरना, राज उसके साथ ही समाप्त हो जाता।

क्या इन्सान द्वारा संचार का केवल यही उद्देश्य है? जानकारी पास करते रहना?

केवल यही नहीं है। इसका एक दूसरा खास मतलब भी है... एक दूसरे के साथ समझौता करने में हमारी सहायता करना। मैं तुम्हें एक उदाहरण देता हूं। जब दो कुत्ते एक ही हड्डी के लिए लड़ते हैं, तब क्या होता है?

वो तो जरूर ही लड़ पड़ेंगे। अन्त में, एक जख्मी हो जाएगा और दूसरा हड्डी पा जाएगा।

...स्त नहीं, पर मान लो वो एक दूसरे से बातचीत कर पाते। तो वो बिना लड़े ही... मामले को सुलझाने का कोई रास्ता ...लेते। वह उसे बांट लेते या हड्डी पर किसका अधिकार होगा, यह फैसला करने के लिए कुछ नियम तय कर लेते

...रण एक दूसरे के साथ शांतिपूर्वक जीवन बिताने में हमारी सहायता करता है। ऐसा ही है ना?

...स में मिल बैठकर बातचीत द्वारा अपने मतभेदों का निपटारा कर ...ता तो, और ज्यादा युद्ध हुए होते। संचार से ही हम एक विशाल ...रूप में साथ-साथ रह रहे हैं।

... हमेशा सम्पर्क बनाये रखेंगे। मानते हो न।

(3)

मुफ़्त!

कैडबरीज़

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

5 स्टार

आपका मनपसंद चाकलेट बार

**विशेष लेबल वाले हर 500 ग्रा.
बोर्नविटा टिन या रीफ़िल पैक के अंदर.**

कैडबरीज़
बोर्नविटा

जल्दी कीजिए! स्टाक सीमित

OBM/1996 HIN

मेलडी की पेशकश

रैपर डकैती में
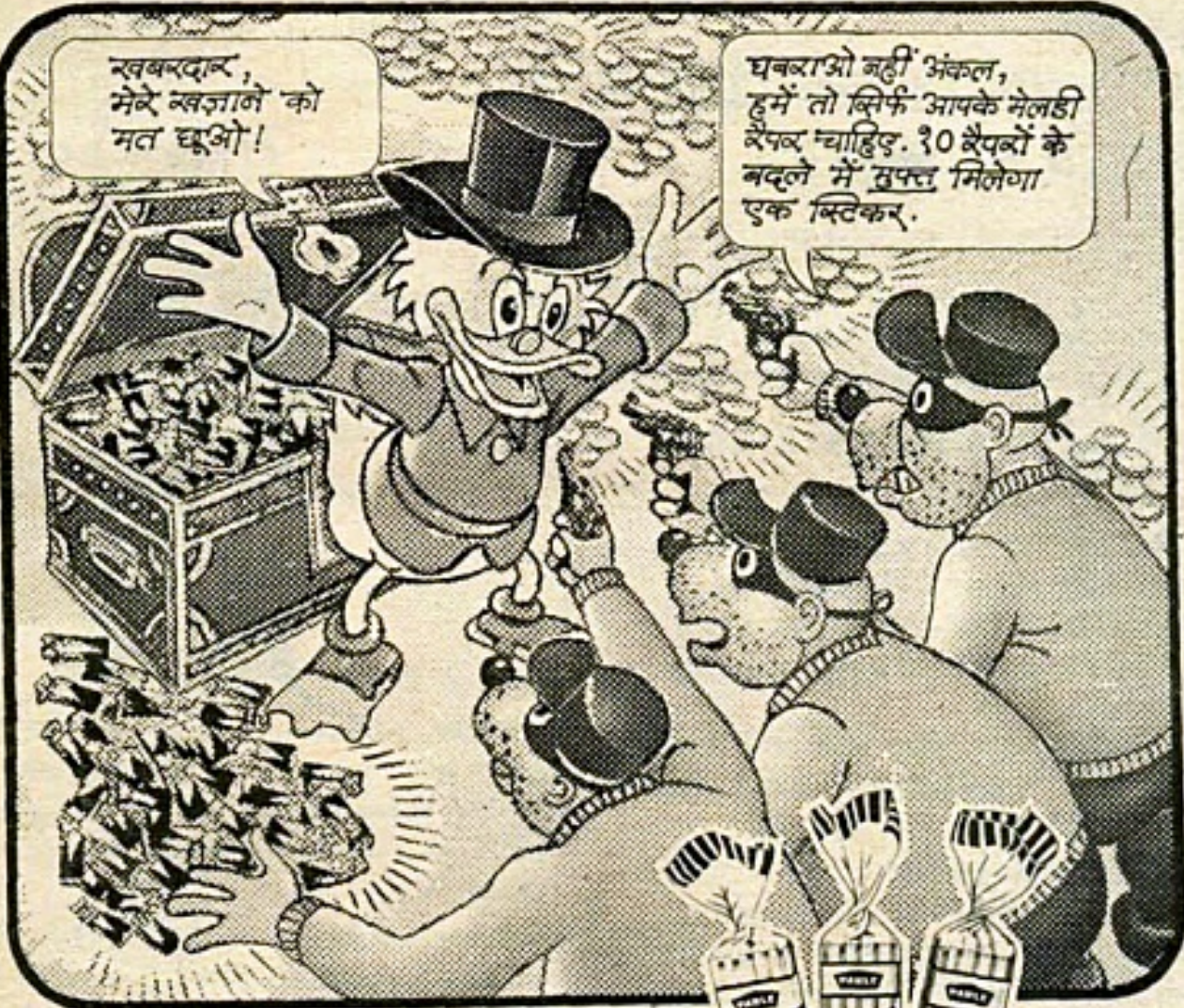
डिज़्नी-दोस्तों के मुफ्त स्टिकर!

आओ बच्चो! अभी से ही अपने चहेते डिज़्नी दोस्तों को जमा करना शुरू कर दो. ये कुल मिला कर ३० हैं. हर स्टिकर के लिए तुम्हें बस मेलडी टॉफी के १० रैपरों के साथ अपना नाम-पता लिखा और ५५ पै. का डाकटिकिट लगा लिफाफा इस पते पर भेजना है: मेलडी टॉफी, पारले प्रॉडक्ट्स प्रा. लि. निर्लोन हाऊस, २५४-बी, डॉ. एनी बेसेन्ट रोड, बम्बई ४०० ०२५

नई पारले

मेलडी टॉफी

कैरामेल और चॉकलेट का मज़ेदार मधुर मेल.

everest/83/PP/311-hn

प्यारे दोस्तो !

मेरा नाम जोइस्का है। मैं सोवियत यूनियन का एक लड़का हूं और भारत में रहने आया हूं। आपकी तरह—मुझे भी डाक टिकट जमा करने का शौक है—मैंने हर आकार के हजारों टिकट जमा किए हैं—फूलों जीव जंतुओं अन्तरिक्ष खेलों तथा और क्या क्या बताऊं...

आप भी आकर्षक डाक टिकट का एक संग्रह तैयार कर सकते हैं।

और मैं इसमें आपकी सहायता करना चाहूँगा...

सोवियत डाक टिकट सुन्दर होते हैं—और उन पर विभिन्न विषयों की रंगबिरंगी तस्वीरें होती हैं। इनसे न केवल आपके टिकट संग्रह का आकर्षण बढ़ता है बल्कि बहुत सी बातों का पता भी चलता है—और इतना ही नहीं इनसे अनेक प्रकार से आपको और भी लाभ होंगे।

आज ही से जमा करना शुरू कीजिए।

१. निम्नलिखित में से अपनी पसंद का विषय चुन लिजिए—
● अन्तरिक्ष ● खेल एवं पर्यटन ● फूल, पौधे ● जीव जन्तु ● कला (चित्रकला, मूर्तिशिल्प आदि) ● समुद्रीय जीवन ● यातायात (रेल्वे विमान, जलपोत एवं कार) ● महान अक्तूबर क्रान्ति ● कम्युनिस्ट पार्टी ● लेनिन ● मिले जुले डाक टिकट।

२. अब इस अनूठी पेशकश पर विचार कीजिए आपको न केवल अपने भेजे हुए पैसे के डाक टिकट मिलेंगे बल्कि जोइस्का की ओर से आपको अनोखे उपहार भी प्राप्त होंगे।
इसके अतिरिक्त आपको डाक टिकटों के बारे में रंग बिरंगी पुस्तिका और पैकेटों, एलबमों, नए जारी किए टिकटों, इस्तेमाल एवं बिना इस्तेमाल किए टिकटों तथा पहले दिन के कवर्स की मूल्य सूचि का पूरा सेट भी मिलेगा—बिलकुल मुफ्त।

३. बस यह निर्णय कीजिए कि आप अपने संग्रह को कितना बड़ा करना चाहते हैं और निम्नलिखित में से चुन लीजिए :

संग्रह	आप भेजेंगे	आपको मिलेंगे	आप चुनिए
क	रु० २५	५० से अधिक डाक टिकट	२ या अधिक विषय
ख	रु० ५०	१०० से अधिक डाक टिकट	१ या अधिक विषय
ग	रु० १००	२०० से अधिक डाक टिकट	न्यूनतम ३ विषय
घ	रु० २००	५०० से अधिक टाक टिकट	न्यूनतम ५ विषय

४. इनमें से आपकी पसंद का चुनाव करने के बाद चिनार एक्सपोर्टस को लिख भेजिए (क) अपना नाम (ख) अपना पता (ग) अपनी पसंद का/के विषय (घ) अपनी पसंद का संग्रह।

इसके साथ चिनार एक्सपोर्टस प्रा० लिमिटेड, नई दिल्ली को देय, मनीआर्डर/पोस्टल आर्डर/बैंक ड्राफ्ट भेज दीजिए।

CHINAR EXPORTS PVT LTD
101-A, Surya Kiran, Kasturba Gandhi Marg,
New Delhi-110001. (INDIA)
Phones: 35–2023, 35–2123
• Cable: VILPANA • Telex: 314212

आप यह विश्वास रखिए कि डाक टिकट असली होंगे तथा आपका आदेश मिलने के २ सप्ताह के अन्दर एकदम सही सलामत वे आपके पास पहुंच जाएंगे।

आप सोवियत डाक टिकट कैरोना शू स्टोर्स तथा सोवियत बुक शॉप्स से भी खरीद सकते हैं।

Shems/CEPD/83

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

भगवान की शक्तियाँ और सिद्धियाँ उनके लिए हैं जो निस्वार्थ और निष्काम हैं। स्वार्थी और क्षुद्र व्यक्तियों के हाथ में पड़ कर ये शक्तियाँ सारे विश्व का संहार तक कर सकती हैं।

यह चेतावनी दी है इस महीने के बेताल ने जिसकी कथा 'वसुन्धरा' की कहानी 'मंत्र योग' पर आधारित है।

और 'योग्य पुत्र' में मिलिए एक योग्य पुत्र से जिसके हृदय में पिता की महानता और माँ की ममता दोनों हैं।

अमर वाणी

भीतिदः सुजनोपि स्यात्, यदि दुर्जन सेवितः, ।
पन्नग स्थाश्रयं वृक्षं, चंदन कः समाश्रयेत, ॥

[दुर्जन को आश्रय देने वाले सज्जन को देख लोग भयभीत हो जाते हैं। चंदन वृक्ष सर्प को आश्रय देता है, इसलिए उसकी छाया में कोई भी विश्राम नहीं करता।]

वर्षः ३६ जनवरी १९८४ अंकः ५

एक प्रतिः २-५० :: वार्षिक चन्दाः २४-००
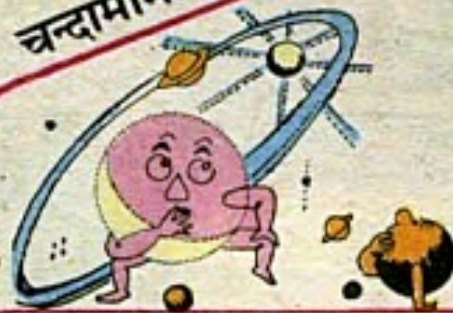
तेज़ चलने वाला चाँद

वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि सौरमंडल में एक ऐसा भी चाँद है जो हमारे चंद्रमा से तीन गुना अधिक तेज़ चलता है।

प्रति घण्टे सत्तर हजार चार सौ मील की गति से चलने वाला यह चंद्रमा सात घण्टे में बृहस्पति की एक परिक्रमा पूरा कर लेता है।

"बरमूडा त्रिभुज" का रहस्य

पश्चिमी अतलान्तिक महासमुद्र में बरमूडा फ्लोरिडा के बीच "बरमूडा त्रिभुज" नाम का क्षेत्र है, जिसमें से गुजरने वाले जलपोत रहस्यमय ढंग से गायब हो जाते हैं। इस क्षेत्र के ऊपर से उड़ने वाले वायुयान भी अदृश्य हो जाते हैं जिनका अवशेष कहीं नहीं मिलता।

केनडा के राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद के सदस्य जोप्लोग के अनुसार उस क्षेत्र में सौ फुट की ऊँचाई तक उठने वाली तरंगें ही जलपोतों और हवाई जहाज़ों को निगल जाती हैं।

नया मनोरंजन

इंग्लैण्ड के यार्क शायर नगर के निवासी चौहत्तर वर्षीय श्री रेग मेल्लर ने एक नये मनोरंजन में नया रिकार्ड बनाया है।

श्री रेग मेल्लर सूई जैसे नाखून और आरे जैसे दाँत वाले जंगली बिलाव की खरोंच और काट पाँच घण्टे छब्बीस मिनट तक सहते रहे। यार्क शायर की जनता में अब इस बात की होड़ लगी है कि कौन कितनी अधिक देर तक उसकी खरोंच और काट सह सकता है।

क्या आप जानते हैं ?

१. विश्व का सबसे पुराना वृक्ष कहाँ पर है ?

२. दो हज़ार वर्ष पूर्व भारत के किस वृक्ष से क़लम काट कर विदेश ले जाया गया और वह कहाँ लगाया गया ?

३. विश्व का सबसे अधिक मोटा वृक्ष कहाँ पर है ?

४. हमारे देखते-देखते बढ़ने वाला वृक्ष कौन-सा है ?

५. एक ही कांड के द्वारा विशाल क्षेत्र में फैला हुआ वृक्ष कहाँ है ?

(उत्तर के लिए पृष्ठ ६४ देखें)

योग्य पुत्र

आनंदपुर का ज़मींदार आनंदराय बूढ़ा हो चला था। उसके तीन बेटे थे। उसके कई साल बाद एक पुत्री भी पैदा हुई थी। उसका नाम स्वर्णा था। आनंदराय अपनी जमीन-जायदाद के साथ पुत्री की शादी की जिम्मेदारी भी तीनों बेटों के बीच बाँट देना चाहता था। लेकिन उसने इस संबंध में अपने पुत्रों की राय जान कर उस के अनुकूल निर्णय लेना चाहा।

एक दिन उन्होंने अपनी पुत्री की शादी की जिम्मेदारी लेने वाले का चुनाव करने के लिए सबसे बड़े पुत्र श्रीकांत को बुला कर कहा—

"बेटा, मैं अपनी जायदाद के चार बराबर हिस्से करके बाँटना चाहता हूँ। स्वर्णा का विवाह तुम्हें ही वैभव के साथ संपन्न करना होगा।" जमींदार ने कहा।

पर श्रीकांत ने कहा— "पिताजी, आप जायदाद के तीन हिस्से करके हम तीनों भाइयों के बीच बाँट दीजिए। हम तीनों मिलकर स्वर्णा का विवाह वैभव के साथ करेंगे। इस से यह होगा कि बहन की शादी में हम तीनों भाइयों का हिस्सा होगा। बहन भी यह सोच कर संतुष्ट हो जाएगी कि उसके तीनों भाइयों ने उसकी शादी में बराबर अपनी जिम्मेदारी निभाई है।"

आनंदराय ने सर हिला कर कहा— "बेटा, तुम्हारा सुझाव एक प्रकार से सही हो सकता है। पर मेरे जिंदा रहते मैं अपनी यह जिम्मेदारी पूरा करना चाहता था। इस विचार से मैंने कई रिश्ते देखे पर उनमें से कोई तय नहीं हो पाया। मेरे जीते स्वर्णा का विवाह होगा कि नहीं, यह भी कह नहीं सकते।"

श्रीकांत ने आश्वासन देते हुए कहा— "पिताजी ! आप इस की चिंता न कीजिए। हम छोटे भाइयों के साथ मिलकर कोई अच्छा रिश्ता देखकर बहन का विवाह ठाठ से करेंगे। जायदाद का बँटवारा मेरे सुझाव के अनुसार

श्रीमती कमला यादव

करेंगे तो बड़ा अच्छा होगा। इस बात में आप जल्दीबाजी न कीजिए। सोच समझकर ही काम कीजियेगा।"

आनंदराय ने बड़े पुत्र को भेज कर दूसरे पुत्र श्रीनिवास को बुला भेजा। उसे भी श्रीकांत की तरह ही समझा कर बोले— "बेटा, बहन की शादी देखने की मेरी बड़ी तमन्ना है। मेरे जिन्दा रहते उस की शादी हो जाय तो इस से बढ़ कर मेरे लिए खुशी की बात और क्या हो सकती है। इस संबंध तुम तीनों को बहन की शादी की जिम्मेदारी बराबर अपने ऊपर लेनी होगी। यही मेरा विचार है।"

"अच्छी बात है पिताजी, आप के सुझाव के अनुसार बहन की शादी हम वैभवपूर्वक संपन्न करेंगे। लेकिन आप बुरा न समझें तो मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि जायदाद के बँटवारे के सबंध में थोड़ा सा परिवर्तन करें तो अच्छा होगा।" श्रीनिवास ने कहा।

आनंदराय ने पूछा— "बताओ, वह परिवर्तन क्या है ?"

श्रीनिवास ने कहा— "जायदाद के छः हिस्से करेंगे तो अच्छा होगा।"

"छः हिस्से ! तुम्हारा मतलब क्या है ?" जमींदार ने पूछा।

"सब से पहले हम चारों चार हिस्से लेंगे। इसके बाद एक हिस्सा बहन की शादी में खर्च करेंगे !" श्रीनिवास ने कहा।

जमींदार ने सोचा कि छठा हिस्सा उनके बुढ़ापे में जीवन यापन के लिए खर्च करने के लिए कहेंगे लेकिन श्रीनिवास के सुझाव ने उनको आश्चर्य में डाल दिया।

"पिताजी ! स्वर्णा का विवाह करने मात्र से हमारी जिम्मेदारी पूरी नहीं होती। उसके बाद भी स्वर्णा को लिवा लाने, ससुराल भेजने और प्रसव संबंधी कार्यों के लिए हमें बराबर खर्च करना पड़ेगा। जायदाद में से अलग रखने वाला छठा हिस्सा इन सारे रिवाजों के पीछे ख़र्च कर सकते हैं।" इस से यह होगा कि बहन की शादी में हम तीनों भाइयों का हिस्सा होगा। बहन भी यह सोच कर संतुष्ट हो जाएगी कि उसके तीनों भाइयों ने उसकी शादी में बराबर

अपनी जिम्मेदारी निभाई है ।" श्रीनिवास ने कहा ।

श्रीनिवास को भेजकर आनंदराय ने तीसरे पुत्र रायमल को बुलवा भेजा ।

जमींदार ने बड़े भाइयों के समान ही सारी बातें तीसरे पुत्र को भी सुनाकर पूछा— "बेटा, जायदाद के चार हिस्से करने में तुम्हारी कोई आपत्ति है ?"

"हाँ, मुझे आपत्ति है पिताजी ।" रायमल ते झट उत्तर दिया ।

"आपत्ति है ? यह तुम क्या कहते हो ?" आनंदराय ने विस्मय पूर्वक पूछा ।

"पिताजी, मेरी समझ में नहीं आता कि इस वक्त दर असल जायदाद बाँटने की जरूरत ही क्या पड़ी है ?" रायमल ने पूछा ।

"मैं, न मालूम और कितने साल जिंदा रहूँ । मेरे जीवित रहते हुए तुम सब के प्रति जायदाद के मामले में मैं न्याय करना चाहता हूँ । मेरी इच्छा है कि मेरे मरने के बाद तुम लोग जायदाद कोलेकर आपस में झगड़ा न करो । इसी विचार से मैं जायदाद बांट कर देना चाहता था ।" जमींदार ने अपने मन की बात कही ।

"पिताजी ! मेरा दृढ़ विश्वास है कि आप दस वर्ष तक जरूर जिंदा रहेंगे । अच्छा रिश्ता देख कर हमें बहन की शादी करनी होगी । इसके बाद ही जायदाद के बँटवारे की बात सोचना उचित होगा ।" रायमल ने सुझाया ।

रायमल की बातों से आनंदराय को अत्यंत प्रसन्नता हुई । "तुम्हारे कथनानुसार किया जा सकता है, लेकिन जायदाद के बाँटने में कोई
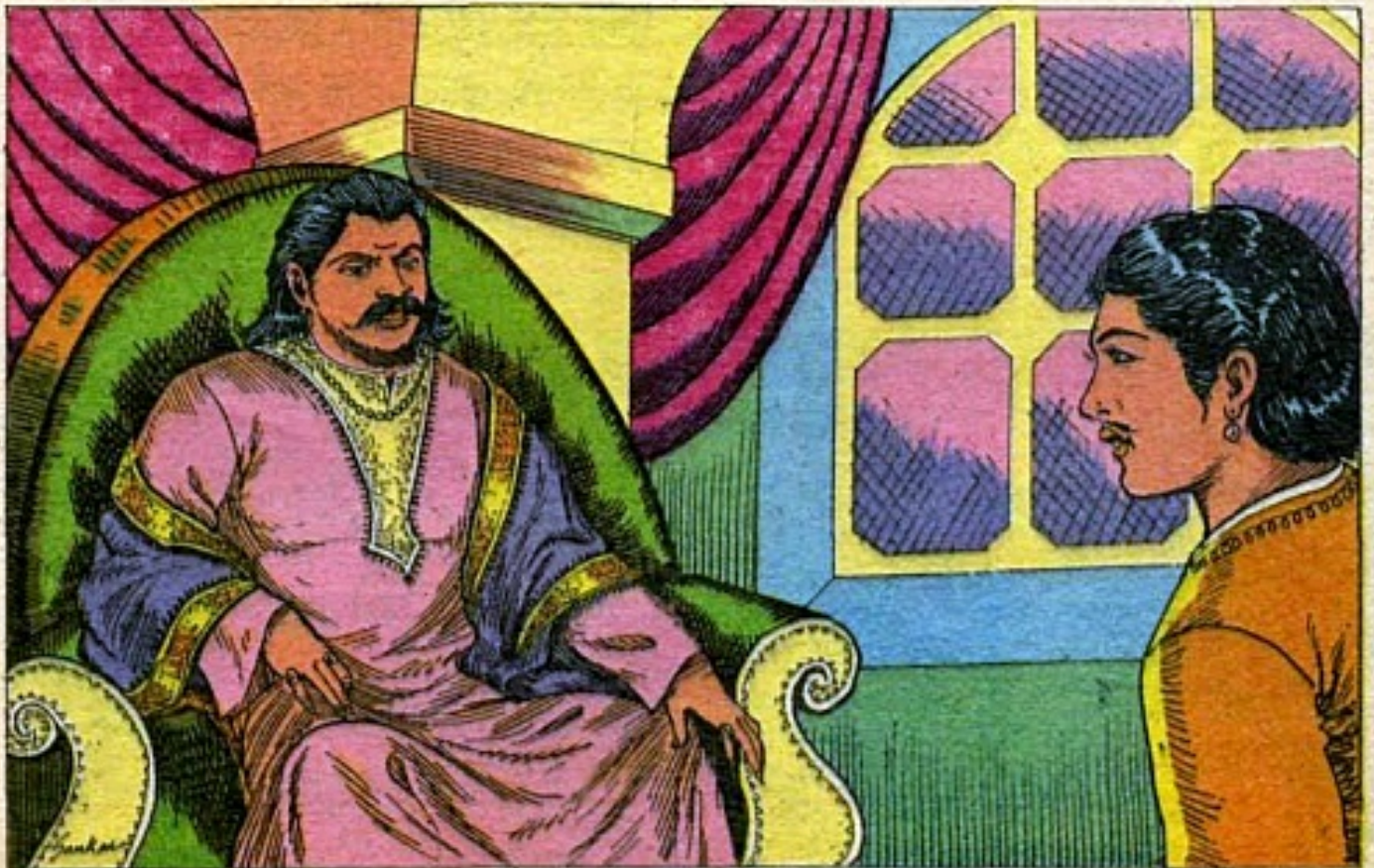
आपत्ति तो नहीं है न ? हम स्वर्णा के लिए भी एक हिस्सा दे रहे हैं । उसकी जायदाद से ही उसके विवाह का खर्च कर सकते हैं । इस सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है ?" जमींदार ने पूछा ।

"पिताजी ! कन्या की जिम्मेदारी सब की होती है । अलावा इसके, जायदाद बाँट देंगे तो आप का क्या होगा ? बँटवारे के बाद हो सकता है कि कोई भी आपकी जिम्मेदारी लेने को तैयार न हो । बहन की जायदाद कहीं उसकी शादी कर सकती है ? इसलिए आप फिलहाल जायदाद बाँट कर देने की बात बिलकुल भूल जाइएगा ।" रायमल ने स्पष्ट शब्दों में कहा ।

आनंदराय थोड़ी देर तक सोचते हुए मौन रहे, फिर बोले— "बहन का रिश्ता तय करने में समय लग सकता है । हमारी प्रतिष्ठा के मुताबिक़ बढ़िया रिश्ता मिलना चाहिए । तब तक मैं जिंदा रहूँगा या नहीं, इस बात में मुझे संदेह है ।"

"पिताजी ! मैंने बहन की शादी का उचित प्रबंध कर लिया है । ठाकुर जमींदार के वंश का मेरा एक मित्र है । वह स्वर्णा के प्रति आकृष्ट है । मैंने उसका चित्र भी मंगवा लिया है । यदि आप को यह रिश्ता पसंद आ जाये तो हम उसके माता-पिता के साथ इस सम्बंध में अभी बात चला सकते हैं । मेरे ख्याल से यह हमारे लिए सब प्रकार से समुचित मालूम होता है ।" रायमल ने सुझाया ।

आनंदराय ने बड़े प्यार के साथ रायमल का आलिंगन किया और कहा— "बेटे, वास्तव में तुम मेरे सच्चे बेटे कहलाने योग्य हो । तुम्हारे बड़े भाइयों ने जायदाद के बँटवारे के बारे में हिसाब तो किया लेकिन बहन की शादी की जिम्मेदारी लेने को कोई आगे नहीं आया । मेरे शेष जीवन के बारे में किसी ने भी गंभीरता पूर्वक कुछ नहीं सोचा । मुझे लगता है कि तुमने जो रिश्ता सुझाया, वह सब प्रकार से उचित मालूम होता है । कल ही जाकर हम उस युवक के माता-पिता से बात करेंगे ।"

८

[पिंगल ने एक बार और शिथिल मंदिर में प्रवेश किया तथा वहाँ की दुष्ट शक्तियों पर विजय प्राप्त करके महामाय की समाधि के समीप पहुँचा। इसके बाद महामाय की अंगूठी, वज्रखचित खड्ग, और भूगोल को हस्तगत करके सुरक्षित रूप से मंदिर से बाहर निकल आया। इतने में नदी के गर्भ में से पानी की एक धारा भयंकर ध्वनि के साथ ऊपर उठी। इसके बाद...]

उस उत्ताल तरंग को देख महामांत्रिक पद्मपाद घबरा कर पीछे हट गया। यह देख कर पिंगल को आश्चर्य हुआ। वह पद्मपाद के पास में खड़े हो कर, उस प्रवाह की ओर देखते हुए बोला— "पद्मपाद, अब सारे संसार को अपनी मुट्ठी में रखने की अनुपम शक्तियाँ हमारे साथ हैं। ऐसी हालत में इन तरंगों को देखकर हमें डरने की क्या जरूरत है?"

पिंगल का सवाल सुन कर पद्मपाद थोड़ा आश्वस्त हुआ। पद्मपाद पिंगल की ओर मुड़ कर उसके कंधे पर प्यार से थपकी देते हुए बोला— "पिंगल, तुमने एक सत्य की ओर इशारा किया, यह बात सही है कि दुनिया भर की शक्तियों पर विजय पाने के उपकरण हमारे हाथों में सुरक्षित हैं। लेकिन इस से भी बढ़ कर तुम जैसे वीर युवक के होते मुझे किसी से डरने

की सचमुच कोई जरूरत नहीं है । तुम कोई मंत्र-तंत्र नही जानते हो । फिर भी तुम ने जो साहस और पराक्रम का परिचय दिया, वह अद्भुत और अपूर्व है । तुम जैसे पराक्रमी इस संसार में विरले ही होते हैं । दर असल बात यह है कि मैं उस नदी गर्भ से ऊपर उठे फव्वारे को देख कर डरता नहीं हूँ । लेकिन..." यों कहकर उस ने फिर नदी गर्भ की ओर नज़र दौड़ाई ।

"आप संकोच क्यों करते हैं ? मैं तो आप का अनुचर हूँ । आप की सहायता करने के लिए आया हुआ हूँ । इसलिए मेरे सामने आप को कुछ छिपाने की आवश्यकता नहीं है । यदि मैं आप की इस समस्या को हल करने में हाथ बटा सका तो इस से बढ़ कर मेरे लिए प्रसन्नता की बात और क्या हो सकती है ! इसलिए आप असली बात बताइये ।" पिंगल ने कहा ।

पद्मपाद मुस्कुरा कर बोला— "महामाय से हमने सारी अद्भुत शक्तियाँ प्राप्त कर ली हैं । इसके कारण इस भल्लूक प्रदेश में इसके पूर्व जो दुष्ट शक्तियाँ स्वेच्छा पूर्वक विहार करती थीं, उन्हें दुर्बल और नष्ट हो जाना चाहिए । लेकिन ऐसा न होकर ये शक्तियाँ और प्रचण्ड रूप धारण कर हमारे सामने आ रही हैं । इसका कारण अभी तक मेरी समझ में नहीं आया । यही मेरे लिए चिंता का विषय है !"

पिंगल के मन में सहसा कोई उपाय नहीं सूझा । उस ने एक-भोले बालक की तरह अपना सिर हिला दिया । पद्मपाद कुछ कहने को था, इसी बीच उस प्रवाह के ऊपर तरह-तरह की भयंकर आकृतियाँ प्रत्यक्ष हो कर लड़ने लगीं । वह एक भयंकर दृश्य था । उसे देखते ही उनकी हिम्मत जवाब देने लगी ।

उस दृश्य को देख पिंगल एक दम काँप उठा और पूछा— "पद्मपाद, इस वक्त हमारा कर्तव्य क्या है ? मैंने ऐसी भयंकर और विकृत आकृतियाँ इसके पहले कभी नहीं देखी हैं ? इसलिएए अचानक ऐसे दृश्य को देख सहम जाना स्वाभाविक था । हम ने जो अब तक महान शक्तिशाली अस्त्रों का प्रयोग किया है, क्या इन पर भी उनका प्रयोग करना होगा ?"

पद्मपाद पल भर के लिए सर झुका कर मौन रहा, फिर पिंगल की ओर देखते हुए बोला— "अब तक इन पर नियंत्रण रखने वाले महामाय की समाधि तक हम पहुँच चुके हैं। उस की शक्तियाँ भी हमारे अधीन आ गयी हैं। इसलिए अब इन दुष्ट पिशाचों के दल का कोई नेता नहीं है। ये सब नेतृत्व के लिए लड़ रही हैं। इन पर नियंत्रण करना इस वक्त हमारे लिए आवश्यक ही नहीं, बलिक अनिवार्य है। इसी बात पर मैं विचार कर रहा दूँ। सुनो, अब हमें एक काम करना होगा। तुम भल्लूक केतु को भूल तो नही गये हो न ?"

"ओह, भल्लूक केतु की बात मैं कैसे भूल सकता हूँ ? एक ज़माने में वह इस पर्वत प्रदेश का अधिपति था। हम ने उसे वचन भी दिया है कि लौटती यात्रा में उसे लोहे की हथकड़ियों से मुक्त करेंगे। हमें अपने वचन का पालन करना होगा। क्या तुमने इस के बारे में कोई उपाय सोचा या नहीं ?" पिंगल ने कहा।

"ओह, यह बात है। हमने उसे जो वादा किया है, उसे पूरा करने के लिए यही एक अच्छा मौक़ा है। यदि इस भल्लूक पर्वत प्रदेश का कोई अधिपति न हो, तो यहाँ के छोटे-बड़े सभी भूत-पिशाच आपस में लड़ते हुए, इस प्रदेश में उत्पात मचायेंगे। इसलिए हम इन दुष्ट शक्तियों पर राज्य करने का अधिकार भल्लूक केतु को सौंप देंगे। वही इन भूत-पिशाचों पर नियंत्रण करेगा। इस तरह हमारी एक जटिल समस्या अपने आप हल हो जाएगी।" पद्मपाद ने कहा।

"यह तो बड़ा अच्छा उपाय है। ऐसा ही कीजिए।" पिंगल ने पद्मपाद के साथ अपनी सहमति व्यक्त की। "अब तुम जल्दी ही यहाँ से निकल पड़ो। उस जंगल के सरोवर वाले प्रदेश को तुम जानते ही हो। वहीं पर भल्लूक केतु बन्दी है ! उसे बंधन मुक्त कर के यहाँ पर ले आओ। फिर आगे की बात सोच लेंगे।" पद्मपाद ने आदेश दिया।

पद्मपाद अपनी कमर में से रत्न खचित मूठ वाली तलवार निकाल कर पिंगल के हाथ में

देते हुए बोला— "तुम इस तलवार की मदद से उसके समीप पहुँचे बिना उसकी हथकड़ियों को तोड़ सकते हो। यह पिशाच गधा तुम्हारा वाहन बना रहेगा।" यों कह कर पद्मपाद ने गदा को हवा में लहराया। दूसरे ही क्षण पृथ्वी को फाड़ता हुआ पिशाच वाला गधा पृथ्वी के भीतर से बाहर कूद पड़ा।

पिंगल महामाय की तलवार हाथ में धारण करके गधे पर सवार हुआ। गधा हवा में उड़ा। जंगल, पहाड़ और नदियों को पार करते हुए थोड़ी ही देर में पिंगल उस प्रदेश में पहुँचा जहाँ पर भल्लूक केतु बंदी बनाया गया था।

रत्न खचित तलवार को हाथ में लिए गधे पर सवार पिंगल को देखते ही भल्लूक केतु ज़ोर से कराह उठा और चिल्लाने लगा— "प्रभू! गार्धभेंद्र! मुझे बचाइये। लोहे की श्रृंखलाओं को तोड़ कर पुण्य कमाइये। मुझ को इन बंधनों से मुक्त कीजिएगा। मैं आप का दास बन जाऊँगा। फिर क्या, आप मुझको जो भी आदेश देंगे, उस का मैं तत्काल ईमानदारी से पालन करूँगा।"

पिंगल हँसते हुए गधे पर से सरोवर के किनारे उतर पड़ा और बोला— "भल्लूक केतु! तुम मुझे कोई देवता समझ कर गार्धभेंद्र की उपाधि क्यों देते हो? वास्तव में मैं एक मानव हूँ। मुझे तुमने एक बार देखा है। मेरा नाम पिंगल है।"

"ओह, आप पिंगल हैं! मुझे याद आया। महामाय की समाधि पर हमला करने वाले महा मांत्रिक पद्मपाद आप के गुरु हैं न?" भल्लूक

केतु ने कहा ।

"हाँ, हाँ ! तुम्हारी स्मरण शक्ति प्रशंसा के योग्य है ।" पिंगल ने कहा ।

"वे महामांत्रिक कुशल पूर्वक तो हैं ? क्या वे महानुभाव महामाय की समाधि तक पहुँच पाये ?" आतुरता के साथ भल्लूक केतु ने जानना चाहा ।

"उस महामाय की समाधि में पहुँचने वाला व्यक्ति मैं ही हूँ । यही महामाय की मंत्रशक्तियों वाली तलवार है ।" यों कह कर पिंगल ने दूर रह कर अपने हाथ की तलवार से भल्लूक केतु की हथकड़ियों पर प्रहार किया ।

दूसरे ही क्षण आँखों को चौंधिया देने वाली कांति की किरणें फूट पड़ीं और भल्लूक केतु की हथकड़ियों से जा टकराईं । तुरंत वे लोहे की जंजीरें रस्सी की भांति जल कर भस्म हो गयीं ।

भल्लूक केतु अपनी विशाल काया को झाड़ कर उठ खड़ा हुआ । वह कृतज्ञता भरी दृष्टि से पिंगल के समीप जाकर, उसे साष्टांग प्रणाम करते हुए बोला— "प्रभू ! आप ने मुझे बंधन मुक्त करके चिरकाल से पीड़ित करने वाली यातनाओं को दूर कर दिया है । आपकी कृपा से ही मैं इस नरक से मुक्त हुआ हूँ । मैं इस क्षण से आपका दास हूँ । आज्ञा दीजिए । मैं आप के लिए क्या कर सकता हूँ ? आप मुझपर विश्वास कीजिए । संकोच मत कीजिए आप मुझे जो भी आदेश देंगे, ईमानदारी से उस की पूर्ति करके आप के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता का परिचयय दूँगा ।"

शक्तियों पर मैं नेतृत्व नहीं चाहता। मैं भली भांति समझ गया हूँ कि उस पद को संभालना कितना कठिन कार्य है। कोई बलवान मांत्रिक या साहसी युवक हम पर हमला कर देता है और इतनी सारी शक्तियों और युक्तियों के रखते हुए भी हम लोगों का भाग जाना एक परिपाटी सी हो गयी है। यही हमारी ज़िन्दगी है। मैं आज से मानवों की सेवा करते हुए जीना चाहता हूँ। मुझे मालूम हो गया है कि मानवों के बीच आप अत्यंत साहसी और पराक्रमी हैं। आप मुझको अपने दास के रूप में स्वीकार कर लीजिए। आप चाहें तो अपने गुलामों का नेतृत्व मुझे सौंप दीजिए।"

"हमें अभी अभी पद्मपाद के पास पहुँचना होगा। महामाय की मृत्यु के बाद भल्लूक पर्वत की घाटियों में रहने वाले छोटे-बड़े सभी भूत-पिशाच नेतृत्व के लिए आपस में लड़ रहें हैं। पद्मपाद का विचार है कि तुम जैसा बलवान व्यक्ति ही उन शक्तियों का नेता बन सकता है। नहीं तो वे पिशाच इस प्रदेश को निरन्तर सताते रहेंगे यह सिर्फ़ मेरा ही विचार नहीं है, बल्कि पद्मपाद का भी यही निर्णय है! हमारा पूर्ण विश्वास है कि तुम इस कार्य को बड़ी आसानी से संपन्न कर सकोगे।"

पिंगल की बात सुनते ही भल्लूक केतु का चेहरा पीला पड़ गया। वह हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए बोला— "प्रभू! इन

"शाबाश! मैं तुम्हारी श्रद्धा-भक्ति की तारीफ़ करता हूँ। तुम्हारी सेवाओं का कैसा उपयोग हो, इस समस्या को मैं हल नहीं कर सकता। पद्मपाद से इस सबंध में विचार-विमर्श करना जरूरी है। अब चलो, देर न करो। हम तुम्हारे इस निर्णय के बारे में वहीं पर विचार करेंगे।" पिंगल ने कहा।

यों समझाकर पिगल अपने पिशाच वाले गधे पर जैसे ही बैठने को हुआ, कि भल्लूक केतु पिशाच गधे की कमर पकड़ कर हवा में घुमा कर आकाश की ओर फेंकते हुए बोला— "प्रभू! आप के लिए पिशाच वाला यह क्षुद्र वाहन उचित नहीं है। आप मेरे कंधे पर सवार

CHITRA

हो जाइए। मैं पल भर में आप को अपने गुरु के पास पहुँचा दूँगा। मेरे रहते आइन्दा आप को इन क्षुद्र वाहनों पर सवार हो जाने की कोई जररूत नहीं है।"

वह गधा आसमान को गुंजाते हुए रेंकने लगा। यह देख भल्लूक केतु हँस पड़ा और पिंगल का स्वागत करते हुए बोला— "प्रभू! अब आप निश्चिंत होकर मेरे कंधों पर सवार हो जाइए।"

पिंगल कोई संकोच किये बिना भल्लूक केतु के कंधों पर जा बैठा। भल्लूक केतु हवा में उड़ने लगा और पल भर में ही पिंगल को पद्मपाद के पास पहुँचा दिया।

पद्मपाद ने भल्लूक केतु को देख कर मुस्कुराते हुए उसका कुशल-क्षेम पूछा तथा पानी की तरंगों और पहाड़ी घाटियों में आपस में लड़ने वाले असंख्य भूतों को दिखा कर कहा— "ये सब नेतृत्व के लिए परस्पर लड़-मर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम यथा शीघ्र इनके झगड़े का फैसला करके इनका राजा बन जाओ।"

पद्मपाद की बातें सुनते ही भल्लूक केतु चिंता में डूब गया और पिंगल की ओर उदास भरी दृष्टि दौड़ाई। पिंगल ने भल्लूक केतु की इच्छा को प्रकट करते हुए पद्मपाद से कहा— "मैं इसको अपना सेवक बनाना चाहता हूँ। मेरा ख्याल है कि इस में आप को कोई आपत्ति न होगी।"

"इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है, वह एक भयंकर दृश्य था। उसे देखते ही उनकी हिम्मत जवाब देने लगी। लेकिन आपस में लड़ने वाले इन भूतों का क्या होगा?" पद्मपाद ने पिंगल से पूछा।

"उसकी बात मुझ पर छोड़ दीजिए। मैं..." यों कह कर भल्लूक केतु कुछ कहने को हुआ ही कि इतने में सारे भूत एक स्वर में सारी दिशाओं को प्रतिध्वनित करते हुए चिल्ला उठे— "ओहोम, ओहोम; भल्लूक केतु!" इसके बाद वे पद्मपाद के समीप दौड़ कर पहुँचने लगे। (...क्रमशः)

मंत्रयोग

दृढ़ संकल्प और साहस का धनी विक्रम पेड़ के पास फिर लौट आया और उस पर से शव को उतार कर उसे अपने कंधे पर डाल चुपचाप श्मशान की ओर जाने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा— "राजन ! मुझे लग रहा है कि आप कोई महान कार्य साधने के लिए ही आधी रात के समय इस भयानक श्मशान में इतना कठिन परिश्रम कर रहे हैं । लेकिन इस कार्य में लगने के लिए आप को प्रोत्साहित करने वाला कोई मांत्रिक तो नहीं है ? ऐसे लोगों पर विश्वास करना खतरे से खाली नहीं होता, साथ ही सफलता की जगह अक्सर निराशा ही हाथ लगती है । एक समय में सुवाक नामक व्यक्ति के साथ ऐसी ही घटना घटी । मार्ग की कठिनाई और श्रम को भुलाने के लिए यह कहानी सुन लीजिए ।" यह कह कर बेताल कहानी सुनाने लगा ।

विंध्याचल की घाटियों में योग की सभी

बेताल कथा
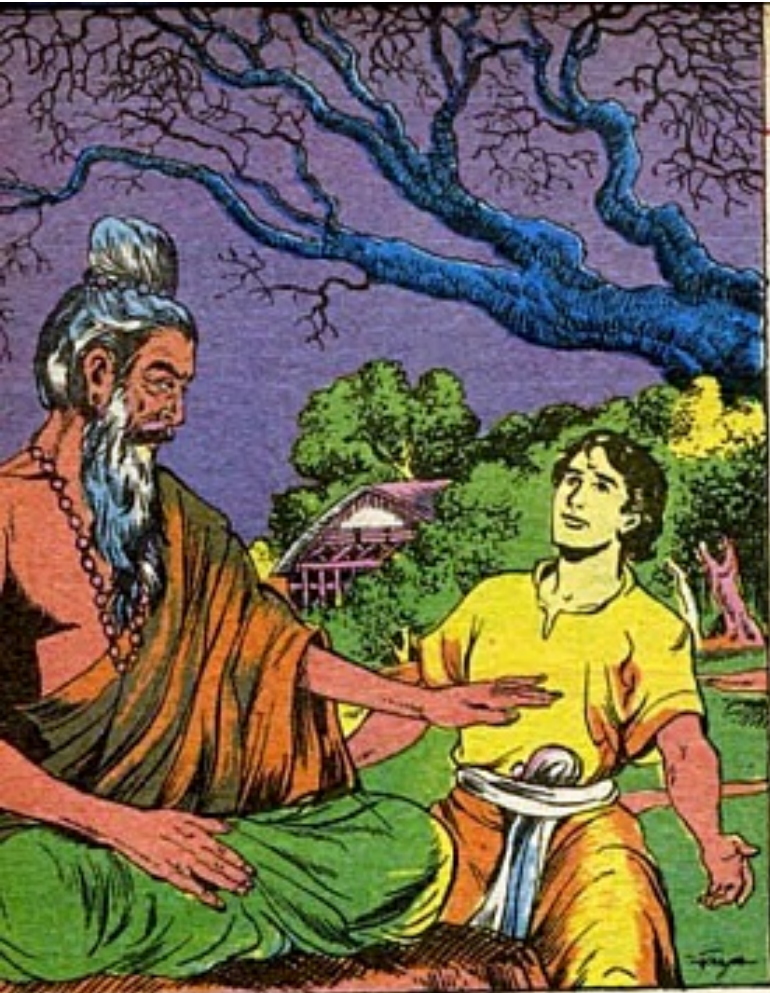
विद्याओं में निपुण एक महायोगी रहता था। उसके यहाँ दूर-दूर से शिष्य योग विद्या सीखने आते और सीख कर चले जाते। उन्हीं में एक शिष्य सुवाक था। मंत्रयोग में इसकी विशेष रुचि थी। महायोगी ने इस विद्या के दो-चार प्रारम्भिक सूत्र बता कर उसे आगे सिखाना बन्द कर दिया।

सुवाक ने एक दिन महायोगी से निवेदन किया— "गुरुवर ! मंत्रयोग में आप मुझे भी अपने समान सिद्ध कर दें तो बड़ी कृपा होगी।"

महायोगी ने समझाते हुए कहा— "इस विद्या को सीखने की योग्यता सभी नहीं रखते। जब तक मुझे यह विश्वास न हो जाये कि इस विद्या का प्रयोग केवल जन-कल्याण में करोगे, तब तक यह विद्या मैं तुम्हें नहीं सिखा सकता। इस विद्या को सीखने के पहले साधक को निस्वार्थ होना जरूरी है।"

सुवाक इसके बाद बहुत दिनों तक श्रद्धा और भक्ति पूर्वक महायोगी की सेवा करता रहा, लेकिन सुवाक को उन्होंने आगे का कोई और मंत्र नहीं बताया। सुवाक का धैर्य टूटने लगा।

एक दिन सुवाक ने महायोगी से प्रार्थना की— "योगिराज ! क्या आप कृपा कर यह बतायेंगे कि इस विद्या को प्राप्त करने का अधिकारी मैं कैसे हो सकता हूँ ? और इस बात का आप को कैसे विश्वास होगा ?"

योगिराज ने पल भर सोच कर कहा— "जो व्यक्ति उज्वल देश की राजकुमारी विद्युल्लता के साथ विवाह करेगा, वही सम्पूर्ण मंत्र योग की सिद्धि का अधिकार पा सकता है।"

महायोगी के मुख से ये शब्द सुन कर सुवाक उसी समय उज्वल देश की ओर चल पड़ा। राजधानी में पहुँच कर और कुछ मंत्रों का चमत्कार दिखा कर उसने वहाँ के नागरिकों को प्रभावित कर लिया।

यह समाचार सुनते ही वहाँ के राजा ने सुवाक को दरबार में बुला कर कहा— "सुना है, आप इंद्रजाल विद्या में सिद्ध हैं। इसलिए अपने चमत्कारों से हमारे अन्तःपुर में आकर हमारा मनोरंजन कीजिए।"

इस पर सुवाक ने विनयपूर्वक उत्तर दिया—"महाराज ! मैं आप की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता, पर सच बात यह है कि मैं कोई जादूगर नहीं हूँ। मैं विंध्याचल में निवास करने वाले एक महायोगी का शिष्य हूँ। आप की पुत्री विद्युल्लता एक विशेष कार्य को साधने के लिए पैदा हुई है। मैं उस महायोगी के आदेश पर विद्युल्लता से कुछ निवेदन करने आया हूँ।"

राजा ने सुवाक को स्वीकृति दे दी। अन्तःपुर में उसके मंत्रयोग के प्रदर्शन का प्रबन्ध किया गया। सभी उसकी मंत्र शक्ति पर मुग्ध हो गये।

प्रदर्शन के बाद जब विद्युल्लता सुवाक का सम्मान करने आई तब सुवाक ने पूछा—"कहिये, आप को मेरा प्रदर्शन कैसा लगा ?"

"मैंने अपने जीवन में ऐसा चमत्कार पहली बार देखा है।" राजकुमारी ने उत्तर दिया।

"मंत्रशक्ति का यह आपने प्रारम्भिक रूप देखा है जो इसके सम्पूर्ण प्रभाव का लाखवाँ हिस्सा भी नहीं है। इसके और भी असंख्य चमत्कार हैं जो विस्मय से भरे पड़े हैं।" सुवाक ने कहा।

राजकुमारी ने अनुरोध करते हुए कहा—"तब तो हमें इसके सारे विस्मयकारी चमत्कार दिखाइये।"

इस पर सुवाक ने उत्तर देते हुए कहा—"बस ! मेरी शक्ति इतनी ही है। इससे अधिक शक्ति प्राप्त करने के लिए मुझे आप की सहायता की जरूरत है।"

"कहिये, मैं आप की क्या सहायता कर

सकती हूँ ?" राजकुमारी ने पूछा ।

सुवाक पल भर हिचकिचाने के बाद साहस करके बोला— "मेरे गुरु महायोगी ने कहा है कि यदि आप मेरे साथ विवाह कर लें तो इस विद्या की सम्पूर्ण सिद्धि का मैं अधिकारी हो जाऊँगा। और तब यदि मैं चाहूँ तो पूरे संसार पर राज्य कर सकता हूँ ।"

विद्युल्लता चिन्तित होकर बोली— "मुझे दुख है कि मैं आप की सहायता नहीं कर सकती। मेरा विवाह विजयपुरी के राजा वीरसेन के साथ निश्चित हो चुका है। वे कल ही यहाँ पधारने वाले हैं ।"

यह उत्तर सुन कर सुवाक का चेहरा पीला पड़ गया। वह कुछ देर तक सोचता रहा, फिर बोला— "यदि आप वीरसेन के साथ विवाह करेंगी तो केवल विजयपुरी राज्य की ही महारानी बनेंगी। लेकिन् मेरे साथ विवाह करके सारे संसार की महारानी बन सकती हैं।"

"आप ठीक कहते हैं, लेकिन अब मैं अपने मन को कैसे बदल सकती हूँ ? विश्व की महारानी बनना मेरे भाग्य में नहीं बदा है ।" राजकुमारी ने उत्तर दिया ।

"लेकिन मैं आप के कारण ही संसार के महाराजा बनने से वंचित रह जाऊँगा, इसलिए इसका फल आप को भुगतना पड़ेगा। मैं राजा वीरसेन के आने तक यहीं प्रतीक्षा करूँगा ।" सुवाक ने कहा ।

दूसरे दिन वीरसेन सचमुच राजधानी में पहुँच गया। सुवाक से पूरी कहानी सुनने के बाद वीरसेन ने कहा— "राजकुमारी और मैंने एक दूसरे को प्यार किया है। राजकुमारी से विवाह को छोड़ कर यदि कोई और इच्छा हो तो मैं आप की सहायता कर सकता हूँ ।"

इस उत्तर से सुवाक के अहं को ठेस लगी और वह आग-बबूला हो गया। उसने क्रोध में शाप देते हुए कहा— "जाओ, तेरा चेहरा कुरूप हो जायेगा ।"

सुवाक के मंत्र के प्रभाव से वीरसेन का चेहरा विकृत हो गया। सुवाक अट्टहास करता हुआ बोला— "अब देखता हूँ विद्युल्लता तुम्हारे साथ कैसे विवाह करती है !"

वीरसेन दर्पण में अपने भयानक चेहरे को देख कर डर गया। उसे अपने आप से घृणा हो गई। वह यह सोच कर तड़प उठा कि अब वह इस हालत में विद्युल्लता के पास कभी न जा सकेगा।

लेकिन तब तक विद्युल्लता तक यह खबर पहुँच चुकी थी। उसने वीरसेन के पास यह सन्देश भेजा— "मैंने आप के बाहरी रूप से नहीं, बल्कि आप के हृदय से प्यार किया है। अतः आप को छोड़ कर किसी अन्य के साथ कभी विवाह नहीं करूँगी।"

यह सुन कर वीरसेन बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सुवाक से कहा— "हम दोनों का प्रेम बहुत पवित्र है। यही कारण है कि मेरे कुरूप हो जाने पर भी विद्युल्लता मेरे ही साथ विवाह करना चाहती है।"

सुवाक ने क्रोधित होते हुए कहा— "लेकिन क्या तुम अब राजकुमारी के योग्य पति हो सकते हो? राजकुमारी का त्याग सराहनीय है, लेकिन तुम स्वार्थ के लिए उसका जीवन नारकीय बनाना चाहते हो। यदि तुम सचमुच राजकुमारी को प्यार करते हो तो तुम उसे भूल जाओ। वह मेरे साथ विवाह करके विश्व की महारानी बनेगी।"

वीरसेन हँसता हुआ बोला— "मैं राजकुमारी के योग्य हूँ या नहीं, यह फैसला उसी को करना है। मैं उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता।"

सुवाक के बहुत प्रयास के बावजूद विवाह निश्चित मुहूर्त्त पर सम्पन्न हो गया। विवाह के समाप्त होते ही वीरसेन का बिगड़ा हुआ चेहरा फिर से सुन्दर हो गया।

सुवाक अपने उद्देश्य में असफल और निराश होकर गुरु के पास लौट गया और बोला— "योगिराज! उज्वल देश की राजकुमारी विद्युल्लता को प्राप्त करने में मैं सफल न हो सका क्योंकि वीरसेन का स्वार्थ हमारे मार्ग में बहुत बड़ी चट्टान बन कर खड़ा हो गया।"

महायोगी ने सुवाक के चेहरे को ध्यान से परखते हुए कहा— "तुम मंत्र योग के योग्य अधिकारी नहीं हो। अतः यह विद्या तुम्हें मैं

कभी नहीं सिखाऊँगा ।''

बेताल ने यह कहानी सुना कर राजा विक्रम से पूछा— ''महायोगी बने उस मांत्रिक का व्यवहार कहाँ तक उचित है ? उसने जान-बूझ कर सुवाक को ऐसे काम के लिए भेजा जो असम्भव था क्यों कि मंत्रशक्ति से उसे मालूम था कि विद्युल्लता का विवाह निश्चित हो चुका है और वीरसेन के लिए उसका प्रेम पवित्र है । और जब वह निराश होकर वापस आया तो योगी ने उसे मंत्र सिखाने से भी इनकार कर दिया । वीरसेन कुरूप होकर भी अपने स्वार्थ के कारण राजकुमारी से विवाह करने के लिए हठ करता रहा । उसी के स्वार्थ पूर्ण हठ के कारण सुवाक सफल न हो सका । फिर यह सब जान बूझ कर मांत्रिक ने सुवाक से इतना निरर्थक श्रम क्यों कराया ? इस सन्देह का समाधान यदि आप जान कर भी नहीं बतायेंगे तो आप का सिर फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा ।''

राजा विक्रम ने उत्तर देते हुए कहा— ''महायोगी का व्यवहार बिलकुल अनुचित नहीं था । वास्तव में महायोगी अपनी मंत्र शक्ति देने से पहले सुवाक के नैतिक चरित्र की परीक्षा लेना चाहता था । सुवाक ने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए मंत्र शक्ति का दुरुपयोग किया और वीरसेन को कुरूप कर दिया । ऐसा व्यक्ति यदि शक्तिशाली हो जाये तो संसार को ही नष्ट कर देगा । इसीलिए योगी ने सुवाक को मंत्र विद्या का पूरा ज्ञान नहीं दिया ।

अब रही वीरसेन के स्वार्थी होने की बात ! सच बात यह है कि सुवाक स्वयं स्वार्थी था और वह अपनी महत्वकांक्षा की पूर्ति के लिए ही राजकुमारी से विवाह करना चाहता था; उसे राजकुमारी से प्रेम नहीं था । वीरसेन को जब यह बात मालूम हुई तो वह अवश्य चाहता था कि राजकुमारी सुवाक को न प्राप्त हो, फिर भी उसने यह फैसला राजकुमारी पर ही छोड़ दिया । राजकुमारी ने अपनी इच्छा से उसे वरण किया । इसलिए इसमें वीरसेन का कोई स्वार्थ नहीं है ।''

राजा के मौन होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा । (कल्पित)

नालायक़ पन्नालाल

सुलतान पुर में पन्नालाल नाम का एक धनी किसान रहता था। वह अपने को बहुत योग्य समझता था और उससे जो भी मिलने जाता उसे नालायक़ समझ कर उसकी खिल्ली उड़ाया करता था। उसकी इस आदत से सारे गाँव के लोग असंतुष्ट थे, लेकिन पन्नालाल धनी था, इस कारण उसके सामने कुछ कहने में संकोच करते थे।

एक बार पन्नालाल अपने किसी काम से पड़ोसी गाँव में गया। लौटने में अधिक देर हो जाने के कारण रात में वहीं एक सराय में ठहर गया। रात में उसे देर तक नींद नहीं आई। उसके दूसरे कमरे में ठहरे हुए दो व्यक्ति आपस में बातचीत कर रहे थे। वह उनकी बातें ध्यान से सुनने लगा— "ओह ! तो आप भी तड़के उठ कर मेरे साथ सुलतान पुर चलने वाले हैं ! लेकिन आप वहाँ किनके घर जा रहे हैं ?" एक व्यक्ति पूछ रहा था।

"मैं पन्नालाल के घर जा रहा हूँ।" दूसरे ने बताया।

"अच्छा ! 'नालायक़' पन्नालाल के घर !" पहले ने हँस कर मज़ाक करते हुए कहा।

दूसरे व्यक्ति ने आश्चर्य के साथ पूछा— "आप यह क्या कहते हैं ? मैंने तो सुना है कि आप के गाँव में पन्नालाल से बढ़ कर कोई अमीर नहीं है। मैं तो ज़मीन-जायदाद में उसे अपने बराबर समझ कर अपने एकलौते बेटे का रिश्ता करने जा रहा था। कोई ऐसी-वैसी बात हो तो मुझे पहले ही बता दीजिए। शायद मुझे वहाँ जाने की जरूरत ही न पड़े।"

इस पर पहला व्यक्ति बोला- "इसमें कोई सन्देह नहीं कि पन्नालाल बड़े सुखी-सम्पन्न हैं। आप घबराइये नहीं।"

दूसरे ने चिन्तित स्वर में पूछा- "आपने उसे फिर नालायक़ क्यों कहा ?"

पहले व्यक्ति ने स्पष्ट करते हुए कहा—

सावित्री निगम

"पन्नालाल जी किसी न किसी बात को लेकर सबको नालायक़ कह कर अपमानित कर देते हैं। इसलिए गाँव के लोग जब भी उनकी चर्चा करते हैं, तो मज़ाक से उनके नाम के पहले 'नालायक़' जोड़ देते हैं। अब यह पूरे गाँव में रिवाज़ सा हो गया है।"

"तब तो पन्नालाल जी को तो दूसरों का मज़ाक उड़ाने की बीमारी है।" पन्नालाल की बेटी के साथ अपने बेटे का रिश्ता करने की इच्छा से जानेवाले व्यक्ति ने कहा।

यह सारी बातचीत सुनने के बाद पन्नालाल अपने पलंग से उठ कर दूसरे कमरे में चला गया और उन दोनों से बोला— "मैंने आप दोनों की बातचीत सुन ली है। मेरे गाँववालों ने समय पर यह सबक़ सिखा दिया है कि केवल सम्पत्ति रखने से समाज में कोई व्यक्ति प्रतिष्ठित नहीं होता बल्कि उसकेलिए यह भी आवश्यक है कि किसी के साथ व्यवहार करते समय उसका दिल न दुखाया जाये। मैं अभी इसी दोष के कारण एक सज्जन व्यक्ति के साथ रिश्ता जोड़ने से वंचित हो जाता। अब तो मेरी आँखें खुल गई।"

"आप की बातों से लगता है कि आप में शिष्टाचार है और आप का हृदय पवित्र है।" रिश्ता जोड़ने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति ने कहा।

पन्नालाल ने पल भर रुक कर कहा— "मनुष्य के अन्दर जाने या अनजाने कोई बुरी लत आ जाती है, जिसे वह खुद समझ नहीं पाता। जब दूसरे लोग उस की ओर किसी न किसी रूप में उसका ध्यान आकृष्ट नहीं करते, तब तक वह उसपर सोचने व विचारने केलिए मजबूर नहीं होता। यदि आप को आपत्ति न हो तो इस रिश्ते के बारे में बातचीत करने के लिए मैं अपने पुरोहित को आप के पास भेज दूँगा। मुझे आप के साथ सम्बन्ध जोड़कर बड़ी प्रसन्नता होगी।"

रिश्ता जोड़ने के इच्छुक व्यक्ति ने खुशी से यह बात मान ली। इसके बाद पन्नालाल के मुख से किसी के मज़ाक उड़ाने की बात किसी ने नहीं सुनी।

विदूषक का पक्का चिट्ठा

कंचनगिरि के राजा स्वर्ण सिंह थे। उन्होंने अपने राज्य के बहुमुखी विकास के लिए कुछ नयी योजनाएँ बनायीं। उन योजनाओं को अमल में लाने के लिए एक विशेष प्रकार की परीक्षा द्वारा राजा ने कुछ योग्य अधिकारियों का चुनाव किया। ये अधिकारी थे—नील, विनील और सुनील। ये तीनों ही बड़े मेधावी और एक से एक बढ़ कर थे।

राजा ने इन तीनों अधिकारियों को बुला कर सभी योजनाएँ समझा दीं और उन पर अमल करने का आदेश दे दिया। राजा को आशा थी कि बहुत जल्दी ही राज्य को इसका लाभ मिलेगा। लेकिन पूरा वर्ष गुजर जाने पर भी कोई सन्तोष जनक नतीजा सामने नहीं आया। इसलिए राजा चिन्तित हो उठे।

कंचनगिरि का पड़ोसी राज्य रजतगिरि बहुत पिछड़ा हुआ था। लेकिन इसी प्रकार की योजनाओं के अमल करने से देखते-देखते राज्य की आश्चर्य जनक रूप में काया-पलट हो गयी। वहाँ पर सुचंद्र नामक सिर्फ़ एक ही अधिकारी सारा काम देख रहा था जब कि कंचनगिरि में तीन-तीन योग्य अधिकारी रखे गये थे। फिर भी रजतगिरि के एक अधिकारी के बराबर अपने राज्य के तीन अधिकारी उन योजनाओं को अमल नहीं कर पा रहे हैं और उनका कोई ठोस नतीजा सामने नहीं आ रहा है। अतः राजा की चिन्ता स्वाभाविक थी।

राजा स्वर्ण सिंह ने एक दिन अपने अन्तरंग मित्र और विदूषक विश्वेश्वर से अपनी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा— "हमारे पड़ोसी राज्य रजतगिरि में जिस काम को सुचंद्र अकेला ही बड़ी सफलता के साथ कर रहा है, उसी काम को हमारे तीन-तीन अधिकारी भी करने में असमर्थ हैं। इससे तो साफ़ मालूम होता है कि या तो हमारे अधिकारी अयोग्य हैं; या वे दिलचस्पी के साथ हमारी योजनाओं को अमल

विनोद रस्तोगी

नहीं कर रहे हैं।"

इस पर विदूषक ने कहा— "महाराज ! सुचंद्र योग्य अधिकारी है, यह मैं मानता हूँ। लेकिन साथ ही मेरा यह भी दृढ़ विश्वास है कि हमारे तीनों अधिकारी सुचंद्र से किसी बात में भी कम नहीं हैं। बल्कि मेरा तो यह दावा है कि हमारा प्रत्येक अधिकारी दो-दो सुचंद्र के बराबर है।"

स्वर्ण सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा— "कुछ लोग अपने देश के अधिकारियों की दक्षता की आँख मूँद कर प्रशंसा करते हैं। तुम भी ऐसे ही लोगों में से हो।"

राजा का उत्तर सुन कर विश्वेश्वर के चेहरे का रंग उड़ गया। फिर भी विनम्रता पूर्वक बोला— "महाराज ! आज तक मुझे आप के सामने अपना गणित ज्ञान निवेदित करने का मौक़ा नहीं मिला। पर मैंने अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए सुचंद्र के साथ अपने अधिकारियों की योग्यता की तुलना करते हुए कुछ हिसाब-किताब तैयार किया है। उसी के आधार पर मैंने अपना विचार आप के सामने रखा।"

यह सुन कर राजा ने उत्सुक होकर विश्वेश्वर से अपना पूरा हिसाब-किताब समझाने का आदेश दिया।

विश्वेश्वर ने अपना लेखा-जोखा समझाते हुए कहा— "महाराज, मेरा गणित अधिकारियों की योग्यता का मूल्यांकन करने को लेकर है। नील, विनील और सुनील तीनों में से प्रत्येक दो-दो सुचंद्र के समान है। लेकिन इनमें से दो की योग्यता मिल कर एक सुचंद्र के समान ही रह जाती है और यदि तीनों की योग्यता एक साथ मिला दी जाये तो वह एक सुचंद्र से भी कम हो जाती है।"

"तुम भी कैसी उलटी-सीधी बातें करते हो ! कभी कहते हो कि हमारा एक अधिकारी दो सुचंद्र के बराबर योग्यता रखता है। और कभी कहते हो कि तीनों मिल कर एक सुचंद्र से भी कम जानते हैं। तुम्हारा यह बेतुका हिसाब मेरी समझ के बाहर की बात है। यदि तुम्हारे पाण्डित्य को छोड़ दें तो तुम्हें मामूली गुना का छोटा-मोटा हिसाब भी नहीं आता।" राजा ने

विश्वेश्वर को फटकारते हुए कहा ।

"महाराज, चाहे मुझे गुना का हिसाब न आये लेकिन अपने देश के अधिकारियों को मैंने भली-भाँति गुन लिया है, मेरा हिसाब कभी गलत साबित नहीं हो सकता । इसमें कोई सन्देह नहीं ।" विश्वेश्वर ने बड़े दावे के साथ कहा ।

"यह कैसे ?" राजा ने प्रश्न किया ।

विश्वेश्वर ने अपने उत्तर को स्पष्ट करते हुए राजा को समझाया— "आपने एक ही योग्यता के तीन मेधावी अधिकारियों को एक साथ मिलकर एक ही जिम्मेदारी निभाने का काम सौंपा है ।

लेकिन उनके व्यक्तित्व और स्वाभिमान में तालमेल न होने के कारण वे किसी सम्मिलित निर्णय पर नहीं पहुँच पाते । इसलिए उन तीनों की योग्यता मिला कर भी एक सुचंद्र के बराबर नहीं हो पाती ।

यदि इनमें से कोई दो ही रखे जायें, तो विचारों में मतभेद होने पर भी अन्त में दोनों एक बात पर सहमत हो सकते हैं और इस प्रकार दो मिल कर एक सुचंद्र की बराबरी कर सकते हैं ।

यदि इनमें से किसी एक ही अधिकारी को यह काम सौंपें तो वह दो सुचंद्र के बराबर सिद्ध हो सकता है क्यों कि उसे हर योजना को अपने ढंग से अमल करने की पूरी स्वतंत्रता प्राप्त होगी ।"

राजा को विश्वेश्वर के हिसाब-किताब से प्रतिभाशाली अधिकारियों की मानसिक दशा का पता चल गया, जिसकी ओर उसने कभी ध्यान नहीं दिया था ।

इसके बाद राजा स्वर्ण सिंह ने आदेश जारी किया कि तीनों अधिकारी बारी-बारी से उस पद को संभालें और एक-एक करके ही अपनी जिम्मेदारी निबाहें ।

कुछ समय के बाद राजा को यह जान कर खुशी हुई कि उनके सभी अधिकारी, विदूषक के पक्के चिट्ठे के अनुसार, सुचंद्र से कहीं अधिक और योग्य सफल सिद्ध हुए ।

अनोखा चित्र

अवन्ती देश की राजकुमारी अद्भुत सुन्दरी होने के साथ बहुत बड़ी चित्रकार भी थी। उसने अपनी शादी के लिए एक शर्त रखी— "जो राजकुमार विश्व की सबसे सुन्दर वस्तु का चित्र बना कर लायेगा, मैं उसी से विवाह करूँगी।"

अनेक राजकुमार प्रकृति के एक से एक सुन्दर दृश्यों के चित्र बना कर लाये, लेकिन राजकुमारी को कोई भी अद्भुत न लगा।

अन्त में मगध के राजकुमार का चित्र राजकुमारी को दिखाया गया। राजकुमारी ने उसे अद्भुत और सर्वसुन्दर कह कर स्वीकार कर लिया। यह चित्र राजकुमारी का ही था।

शर्त के अनुसार मगध के राजकुमार के साथ राजकुमारी का विवाह हो गया। विवाह के बाद राजकुमारी ने राजकुमार से पूछा— "आपने यह निर्णय कैसे लिया कि संसार की सुन्दरतम वस्तु मैं ही हूँ।"

"यह कोई बड़ी बात नहीं। तुम्हारी जगह और कोई होती तो भी मैं उसी का चित्र बनाता।" राजकुमार ने मुस्कराते हुए कहा।

राजकुमारी भी राजकुमार की बुद्धिमत्ता पर मुस्कराने लगी।
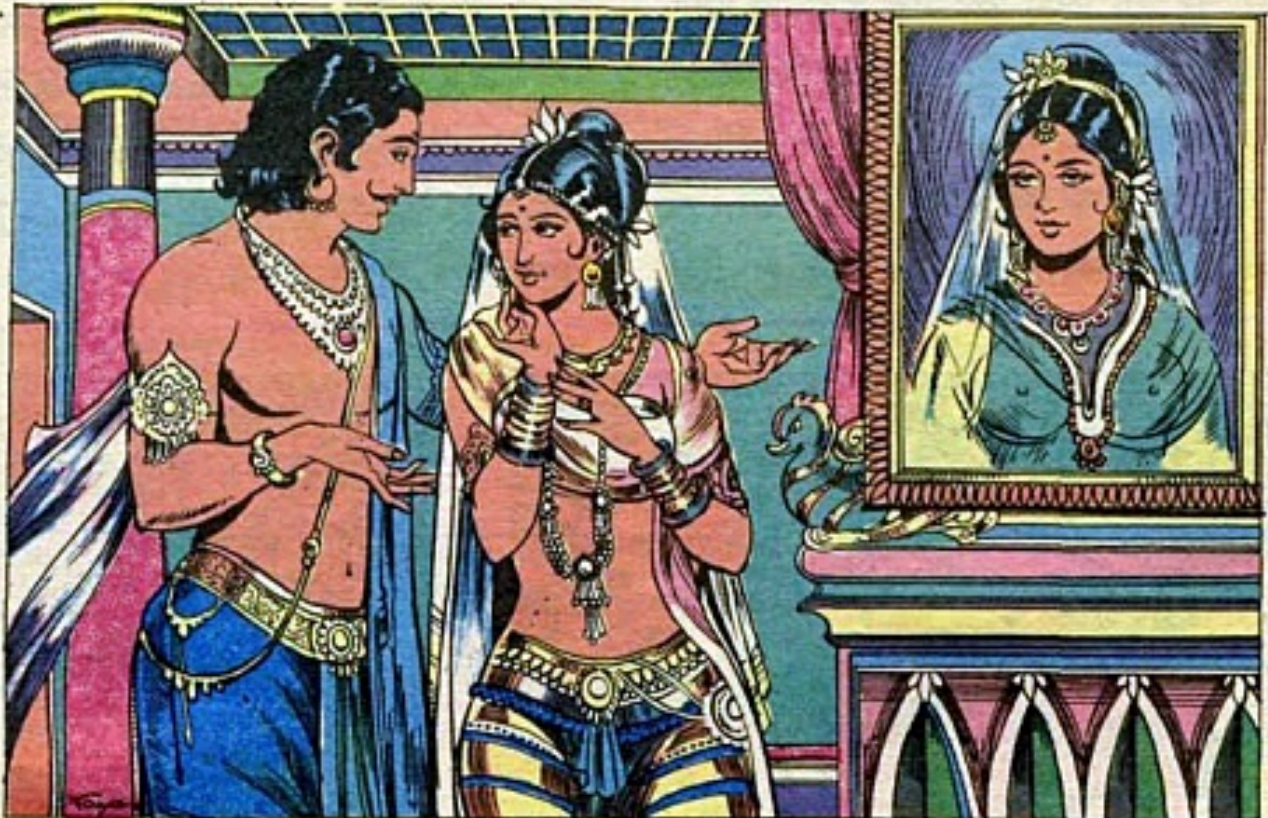
महावत राजा बना

ब्रह्मदत्त के शासन काल में बोधिसत्व वाराणसी के समीप एक साधु के रूप में रहा करते थे। वे एक दिन नगर में भिक्षाटन के लिए निकले और एक महावत के घर पहुँचे। महावत हाथियों को फँसाने और उन्हें प्रशिक्षण देने में बड़ा ही कुशल था। वह राजदरबार में कर्मचारी था।

महावत ने बड़े ही आदर के साथ बोधिसत्व का स्वागत किया और उन्हें अपने घर में खाना खिलाया। इसके बाद उसने बोधिसत्व से निवेदन किया कि वे थोड़े दिनों तक और उसका आतिथ्य स्वीकार करें।

बोधिसत्व महावत के घर पर एक सप्ताह तक रहे। वहाँ से चलते वक्त उसकी हित-कामना करते हुए उसे आशीर्वाद दिया। इनके आशीर्वाद के कारण एक दिन वह महावत से राजा बन गया।

एक दिन रात को नगर के एक मंदिर पर एक लकड़हारा लेटा हुआ था। समीप के एक पेड़ की शाखाओं पर कुछ मुर्गे सो रहे थे। पेड़ के नीचे कोई आहट हुई। इस पर एक मुर्गा जाग उठा और उसने अपने पंख फड़फड़ाये। इससे एक सूखी लकड़ी टूट गयी और नीचे की डाल पर सोने वाले एक मुर्गे पर जा गिरी। वह मुर्गा जाग उठा।

मुर्गे ने क्रोध में आकर सर उठाकर ऊपर देखते हुए कहा— "तुम्हारा यह घमण्ड ठीक नहीं है ! जानते हो मैं कौन हूँ ? कोई अगर मेरा माँस खाये तो उसे बहुत बड़ा खज़ाना हाथ लगेगा ! मेरे महत्व को जाने बिना तुम ने मेरे साथ खिलवाड़ किया जो सर्वथा अनुचित है। लोग दूसरों के बड़प्पन को नहीं समझते। अपने आप को बढ़ा-चढ़ा मानते हैं। अपने में अन्दर फूले रहते हैं। आख़िर वे लोग कुएँ के मेंढक जो होते हैं।"

ये बातें सुन कर ऊपर की डाल पर रहने

निचली डाल पर सोने वाले मुर्गे को छोड़ ऊपरी डाल पर सोने वाले मुर्गे को पकड़कर घर की ओर चल पड़ा। उस के मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ उठने लगीं। वह एक बहुत बड़े राज्य का राजा बनेगा। सिंहासन पर बैठेगा। उसके अधीन मंत्री, सेनापति, अधिकारी और अनेक राज कर्मचारी होंगे। चतुरंगी सेना होगी। सारी जनता पर वह अपना हुक्म चलाएगा। उसकी पत्नी रानी बनेगी! वह सोने के गहनों के साथ हीरे व जवाहरातों से लदी रहेगी। रोज उन्हें खाने को तरह-तरह के मिष्टान्न मिलेंगे। उसके भाग्य को देख सभी लोग ईर्ष्या से भर उठेंगे। उसके बच्चे राजकुमार कहलाएँगे, इन्हीं कल्पनाओं से उसका दिल उछल पड़ा और उसके मन का मयूर नाच उठा।

वाला मुर्गा कहकहे लगाकर बोला— "तुम्हें मेरे बड़प्पन का क्या पता है! अरे, तुम्हीं अपने को बहुत बड़ा समझ कर इतराते हो! यहाँ पर तुम से कोई कम नहीं है! तुम अपनी इस छोटी सी हैसियत पर घमण्ड करते हो! पर अच्छी तरह कान खोल कर सुन लो! मेरा मांस खानेवाला व्यक्ति राजा बनेगा, राजा।" यों अपना भेद खोल दिया।

यह वार्तालाप सुनकर लकड़हारा खुशी से नाच उठा। वह थोड़ी देर तक इंतजार करता रहा। जब उसे विश्वास हो गया कि मुर्गे सो रहे हैं तब वह चुपके से पेड़ पर चढ़ गया। उसे लगा कि जब वह राजा बन सकता है तो उसे खज़ाने से क्या मतलब? यों विचार कर वह

घर पहुँचने के बाद वह अपनी पत्नी से बोला, "जानती हो, तुम जल्दी रानी बनने वाली हो।"

लकड़हारे की पत्नी गुस्से में आकर बोली— "तुम पागल तो नहीं हो गये? मैं तो लकड़हारे की पत्नी हूँ। फिर भी मुझे कोई दुःख नहीं है। मैं खुश हूँ।"

लकड़हारा ज़ोर से हँस पड़ा और बोला— "लकड़ी काट कर पेट भरने वाला तुम्हारा पति गद्दी पर बैठने वाला है। लो, इस मुर्गे को काट कर इसकी तरकारी बनाओ।" इन शब्दों के साथ उसने अपनी पत्नी के सामने मुर्गे के माँस

का रहस्य खोल दिया ।

इस पर लकड़हारे की पत्नी खुशी से फूली न समायी । उसने उसी वक्त मुर्गा काट कर माँस पकाया ।

लकड़हारा बोला— "पहले हम नदी में नहाँएगें, फिर खाना खायेंगे ।"

इसके बाद उन दोनों ने मुर्गे के माँस को एक मटके में भर कर उस पर ढक्कन लगाया और उसे साथ ले कर वे दोनों नदी की ओर चल पड़े ।

वे मटके को किनारे रख कर नहाने के लिये नदी में उतर पड़े । देखते-देखते नदी में बाढ़ आ गयी । किनारे पर रखा हुआ मटका पानी में बह गया ।

लकड़हारा सर पीटते हुए बोला— "हमारी क़िस्मत में राजा और रानी बनना नहीं बदा है । मैं क्या करूँ ?" दोनों चिंता में डूबे घर की ओर चल पड़े ।

उस वक्त बोधिसत्व को आतिथ्य देने वाला महावत नदी में एक हाथी को नहला रहा था । पानी में बहनेवाले मटके पर उसकी नज़र पड़ी । उसने मटका उठाया और ढक्कन खोल कर देखा थोड़ी ही देर पहले पकाया गया चावल और माँस उसमें पड़ा था । वह नदी में ताजा भोजन बहता देख कर चकित था । वह भूखा था, इसलिए उसने तुरन्त उसे खाकर अपनी भूख मिटायी ।

इस घटना के तीन दिन बाद दुश्मन ने वाराणसी पर हमला बोल दिया । राजा ने शत्रु द्वारा मारे जाने के डर से महावत का वेष धारण

कर लिया और महावत को अपना वेष पहना दिया ।

चढ़ाई करने वाले शत्रु राजा ने राजा को जीवित पकड़ने की योजना बनाई । इसलिये दुश्मनों ने महावत को मार कर हौदे पर बैठे महाराजा को बंदी बनाने के लिये महावत पर बाणों की वर्षा की । वे लोग नहीं जानते थे कि महावत के वेष में रहने वाला व्यक्ति ही उस देश का राजा है ।

बाणों के आघात से महावत के वेष में रहने वाला राजा मर गया । महावत को शत्रु की योजना का पता चल गया । फिर भी वह लड़ाई के मैदान से भागा नहीं, उसने दुश्मन के साथ बदला लेने के ख्याल से डट कर उस का सामना किया ।

इस पर वाराणसी के सैनिकों की हिम्मत बढ़ गयी । वे भूखे सिंह-शावकों की भाँति दुश्मन पर टूट पड़े । थोड़ी ही देर में दुश्मन के अधिकांश सैनिक मारे गये और बाकी लड़ाई के मैदान से भाग खड़े हुए । तब उनका राजा महावत के भाले की चोट खाकर वहीं पर ठंडा हो गया ।

लड़ाई समाप्त होने पर मंत्री और राज-कर्मचारियों को पता चल गया कि शत्रु पर विजय का कारण उनका राजा नहीं बल्कि महावत है । महाराजा का देहांत हो चुका था । पर उनकी जगह उन्हें एक और राजा की ज़रूरत थी । वैसे मृत राजा के कोई संतान भी न थी ।

राज-पुरोहित ने सलाह दी कि वाराणसी के राजा ने स्वयं अपनी पोशाकें महावत को दी थीं, इसलिये महावत ही राजा बनने योग्य है ।

प्रधान मंत्री ने उसका समर्थन करते हुए कहा— "महावत की वीरता के कारण ही शत्रु पर हमें विजय मिली । इसलिये वही राजा बनने योग्य है ।"

इस पर, प्रधान-मंत्री, पुरोहित और राज्य के ऊँचे अधिकारियों ने भी यही सम्मति दी ।

इस प्रकार महावत वाराणसी का राजा बन बैठा । उसकी प्रार्थना पर बोधिसत्व ने उसके प्रधान सलाहकार बनने की स्वीकृति दे दी ।

छत्रपति शिवाजी-२

मराठों ने अपने नेता शिवाजी को मुगलों की क़ैद से सुरक्षित वापस आये देख कर खूब आनन्दोत्सव मनाया। सन् १६७४ में इनका राजतिलक हुआ और ये 'छत्रपति' कहलाये ।
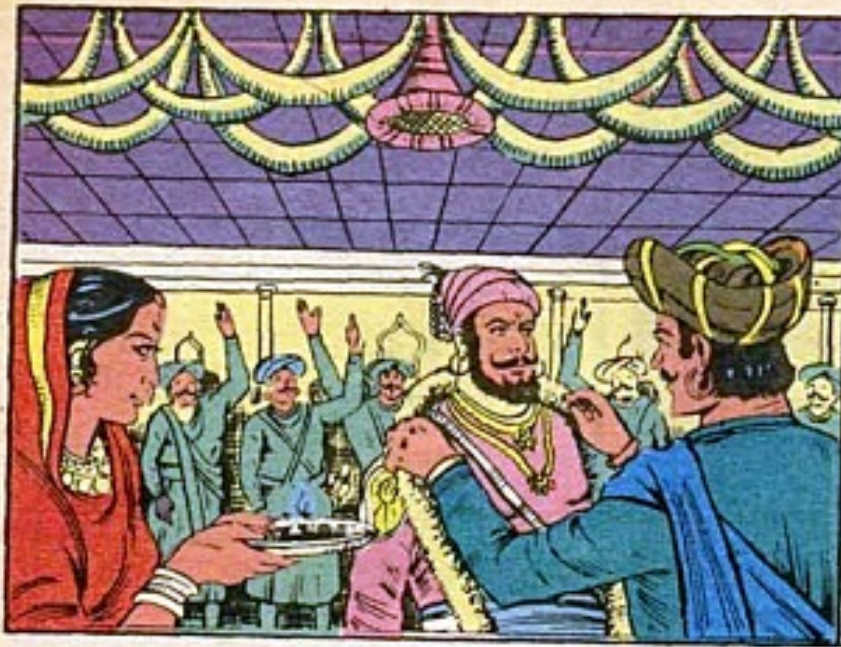
मराठों और मुगलों के बीच अक्सर युद्ध होते रहते । शिवाजी अपनी वीरता, साहस तथा आदर्श चरित्र से अपने अनुचरों और सैनिकों को प्रेरित और उत्साहित करते रहते। इनके सेनापति बाजी प्रभु ने शिवाजी को सुरक्षित स्थान तक भाग जाने में सहायता करने के लिए एक गुफा के मुख द्वार पर पूरी सेना से अकेले लड़ते-लड़ते प्राण दे दिये ।

हारे हुए शत्रु के सैनिकों के साथ शिवाजी आदरपूर्वक व्यवहार करते थे । हिन्दू धर्म के प्रति अपार श्रद्धा-भक्ति होते हुए भी अन्य धर्मों के प्रति आदार-भाव रखते थे, एक बार उन्हें कुरान शरीफ़ की एक प्रति मिली जिसे उन्होंने एक मुसलमान को भेंट कर दी थी ।

कल्याण दुर्ग के शासक मौलाना अहमद ने शिवाजी के सेनापति अबा जी सोनदेव से हार जाने के बाद उपहार के रूप में अपनी कन्या को भेज दिया। लेकिन शिवाजी ने उसे देखते ही कहा— "मेरी माँ यदि इतनी सुन्दर होती तो मैं भी कितना सुन्दर होता !" और उसे उपहारों के साथ अहमद के पास वापस उसी प्रकार विदा किया जैसे एक पिता अपनी बेटी को विदा करता है।

धार्मिक प्रवचन सुनने में इनकी बड़ी रुचि थी। एक बार ये भक्त तुकाराम के प्रवचन सुन रहे थे। यह खबर पाकर शत्रु के आदमी वहाँ इनकी खोज करने लगे। उस समय शिवाजी की शक्ल का एक आदमी वहाँ से भागने लगा। शत्रु के सैनिकों ने उसका पीछा किया। उपदेश समाप्त होने पर शिवाजी सुरक्षित अपने निवास पर पहुँच गये।

शिवाजी साधु रामदास की संगति में ही अपना जीवन यापन करना चाहते थे। लेकिन शिवाजी को देश के बहुत महत्वपूर्ण कार्य करने थे, इसलिए वे शिवाजी से दूर ही रहने की कोशिश करते। एक दिन रामदास भिक्षा माँगते हुए उनके महल पर आ गये। शिवाजी ने अपने सारे राज्य की वसीयत गुरु रामदास के नाम लिख कर वसीयत नामा उनके भिक्षा पात्र में डाल दिया।

अपने गुरु समर्थ रामदास के आदेशानुसार शिवाजी ने न्यायपूर्ण शासन की स्थापना में सारा जीवन लगा दिया। इन्होंने मन्दिरों के निर्माण के साथ-साथ मस्जिदों के निर्माण में भी सहायता पहुँचाई। वे सभी धर्मों के प्रति समान आदर भाव रखते थे, मगर उन्होंने औरंगज़ेब के धार्मिक पक्षपात और कट्टरता का डट कर मुक़ाबला किया।
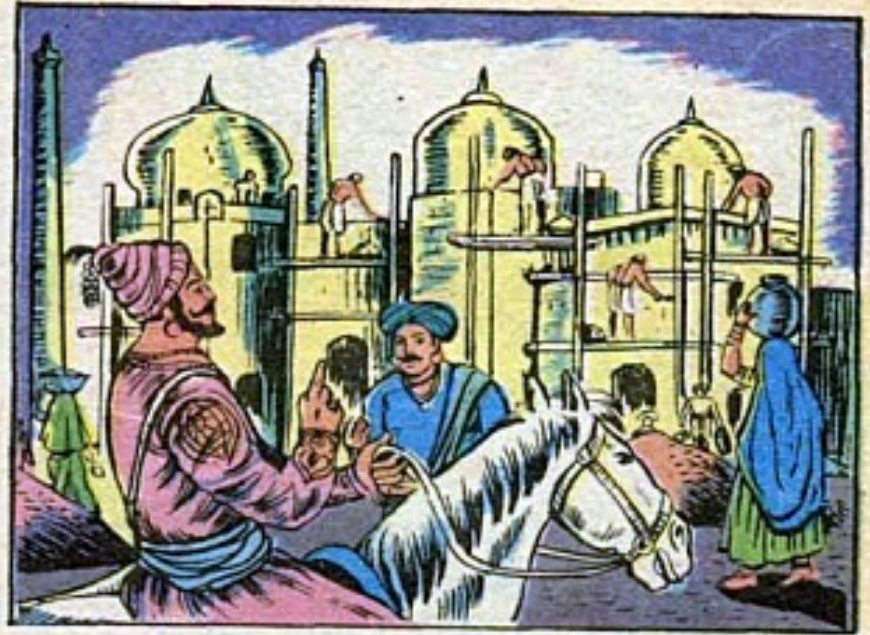
अत्यन्त पराक्रमी और महान नेता शिवाजी ने सन् १६८० में ५३ वर्ष की आयु में संसार से विदा ले ली। उनकी मृत्यु से न सिर्फ़ महाराष्ट्र को बल्कि सारे देश को अपूरणीय क्षति पहुँची।

शिवाजी के बाद उनके पुत्र शंभोजी ने साहस के साथ मुगलों से अपने साम्राज्य की रक्षा की। शम्भोजी के नेतृत्व में मराठों की अद्भुत एकता के कारण मुगल कभी इन्हें हरा न सके।

एक बार जब शम्भोजी कहीं सो रहे थे, मुगलों ने उन्हें अचानक धोखे से बन्दी बना लिया और क्रूरता पूर्वक उनकी हत्या कर दी।

शम्भोजी की हत्या से मराठों का क्रोध भड़क उठा और उन्होंने मुगल सेना के विरुद्ध गुरिल्ला लड़ाई छेड़ दी। मराठों की ताक़त को दबाने की औरंगज़ेब ने हर कोशिश की। लेकिन धीरे-धीरे मुगलों की शक्ति घटने लगी।
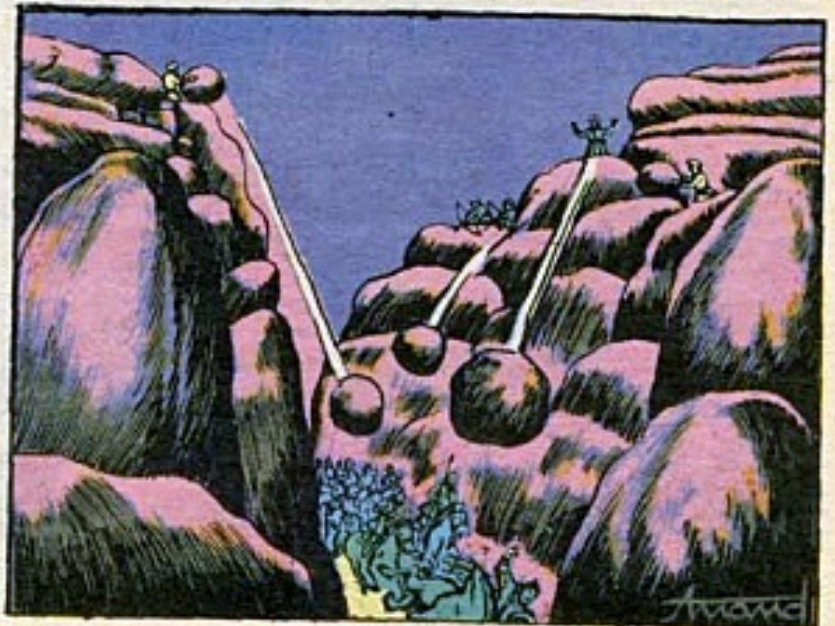
शम्भोजी के बाद इनके भाई राजाराम ने मराठों का नेतृत्व किया और पहले जिंगी दुर्ग से तथा बाद में सतारा दुर्ग से अपनी मृत्यु पर्यन्त यानी सन् १७०० ई० तक लड़ाई ज़ारी रखी। राजाराम के बाद उनकी पत्नी ताराबाई ने बड़ी दक्षता से सेना का संचालन किया। औरंगज़ेब हमेशा इनसे परेशान रहने लगा।

लालच बुरी बला

कैरो नगर में एक बड़ा लालची महाजन रहता था। वह ग्राहकों की जरूरत को भाँप कर उनसे अधिक से अधिक ब्याज़ बसूलने की कोशिश करता। उसे अपनी चालाकी पर घमण्ड भी था। वह अक्सर लोगों से कहा करता— "मुझे धोखा देनेवाला आज तक दुनिया में पैदा ही नहीं हुआ।"

महाजन के व्यवहार से उधार लेने वाले तंग आ गये थे, तिसपर उसका घमण्ड सब को खलता था। लेकिन जरूरत के वक्त ज्यादा ब्याज लेकर ही सही, वह लोगों का काम आता था। इस नाते लोग चुपचाप उसकी हरकतों को सहन कर लेते थे।

एक बार नगर के चार युवकों ने उस घमण्डी और लालची महाजन को सबक सिखाने का निश्चय किया। उन सब ने मिल कर एक योजना बनाई।

योजना के अनुसार उनमें से एक युवक गधे पर सवार हो महाजन के पास पहुँचा और बोला— "क्या आप मेरे धन के कुछ छुट्टे दीनार देने की मेहरबानी करेंगे ?"

"क्यों नहीं ? लेकिन इसके बदले तुम्हें कुछ अधिक धन देना होगा।" यह कह कर महाजन छुट्टे गिनने लगा। इतने में ही अन्य तीनों युवक भी वहाँ पहुँच गये और पहले युवक के गधे को ध्यान से देखने लगे। इसके बाद एक युवक ने दूसरे युवक के कान में धीमी आवाज़ में कहा— "यह वही गधा है।"

तीसरा युवक बोला— "मुझे तो यकीन नहीं होता।"

"तुम चुप रहो। हमें तो इसी गधे की जरूरत है न। उसके मालिक से पूछो कि कितने में वह इसे बेचेगा।" पहले और दूसरे युवकों ने कहा।

फिर उन्हीं दोनों युवकों ने गधे के मालिक से पूछा— "बताओ भइया! इस गधे का क्या

मिस्र की लोक कथा

हज़ार दीनार ले लो और गधा हमारे हाथ बेच दो ।"

महाजन को जैसे अपनी आँखों और कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। क्यों कि उसने अपनी जिंदगी में कभी किसी के द्वारा एक गधे को हज़ार रुपयों में खरीदते व बेचते हुए न देखा था और न सुना ही था। उसने उन युवकों से कहा— "यदि एक हज़ार में गधा खरीदने को तैयार हो तो मैं तुम्हें दो-दो गधे दे सकता हूँ।"

इस पर युवक हँसते हुए बोले— "महाजन! तुम्हें इस गधे के बारे में मालूम नहीं है। यह मामूली गधा थोड़े ही है। हम को मूर्ख मत समझिए। हम भी थोड़ी-बहुत अक्ल रखते हैं। दर असल सच्ची बात यह है कि यह तो दो हज़ार दीनार में भी सस्ता है।"

इस पर गधे के मालिक ने कहा— "यदि तुम लोग सचमुच इस गधे को खरीदना चाहते हो तो दस हज़ार दीनार से एक भी कम न होगा।"

"हमारे पास पाँच हज़ार से अधिक नहीं है, इसलिए ज्यादा हठ न करो। क्या एक गधे का पाँच हज़ार दीनार कम है? हमारी जरूरत को देख तुम हम से बेजा फ़ायदा उठाना चाहते हो। अरे भले आदमी, अगर इस वक्त हम इतना मूल्य चुका कर तुम्हारा गधा खरीद न ले तो बाद को किसी खरीददार को न पाकर तुम पछताओगे। ज्यादा लालच में न आ जाओ, फिर एक

मूल्य लोगे?"

गधे के मालिक ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा— "तुमसे किसने कहा कि मैं गधा बेचना चाहता हूँ।"

"हम इस गधे का सौ दीनार दे सकते हैं। क्यों नहीं तुम इसे बेच देते?" तीनों युवकों ने जोर देते हुए कहा।

महाजन आश्चर्य से सोच रहा था— "यह गधा दस दीनार से अधिक का न होगा, फिर भी ये लोग सौ दीनार देने को क्यों तैयार हैं? ये युवक पागल तो नहीं हैं? या इसके पीछे कोई रहस्य छिपा हुआ है।"

एक युवक ने क्रोध का अभिनय करते हुए कहा— "क्यों समय नष्ट कर रहे हो? एक

बार सोच लो !" तीनों युवकों ने क्रोध का अभिनय करते हुए कहा ।

इस पर गधे के मालिक ने भी गुस्से में आकर कहा— "मुझे हठी बताने वाले तुम कौन हो ? तुम्हारे पास दस हज़ार है तो गधा ले जाओ वरना रास्ता नापो ।"

इस प्रकार उन चारों युवकों में विवाद बढ़ता गया । अन्त में गधे का मालिक खीझ कर बोला— "तुम लोगों का व्यवहार अच्छा नहीं है, इसलिए अब दस हज़ार में भी गधा नहीं दूँगा ।"

इस पर वे तीनों युवक चुपचाप वहाँ से चले गये और गली के निकट एक पेड़ की छाया में बैठ गये ।

महाजन ने गधे के मालिक को समझाया— "देखो भाई ! इस कम्बख्त नाचीज़ गधे के लिए पाँच हज़ार दीनार कोई सपने में भी न देगा । तुम मेरी बात मान कर इसे बेच दो ।"

"आप को इस गधे का राज़ नहीं मालूम । यदि इसे आधी रात के वक्त छोड़ दो तो यह गड़े खज़ानों का पता बता सकता है ।" गधे का मालिक बोला ।

इसके बाद गधा वाला गधे के साथ चला गया और एक शर्बत की दुकान पर जाकर शर्बत पीने लगा ।

पेड़ के नीचे बैठे युवक महाजन के पास

फिर आकर बोले— "महाशय ! अब यह युवक हम लोगों से नाराज़ हो गया है, इसलिए वह गधा हमें दस हज़ार में भी नहीं बेचेगा । आप हमें दस हज़ार में ही उससे खरीद कर दे दीजिए । इसके बदले सौ दीनार हम अलग से देंगे ।"

"सिर्फ एक सौ ? यह तो बहुत कम है !" महाजन ने और लालच किया ।

"चलिये, दो सौ ले लीजिए । लेकिन जल्दी कीजिए । वह अब जाने ही वाला है ।" तीनों युवकों ने अपना उतावलापन ज़ाहिर करते हुए कहा ।

महाजन ने गधे के मालिक के पास जाकर

दस हज़ार दीनार में गधा बेच देने का अनुरोध किया। गधे के मालिक ने उसकी बात मान कर दस हजार दीनार लेकर गधा बेच दिया।

इसके बाद महाजन ने उन युवकों से कहा— "यदि तुम लोग इस गधे को खरीदना चाहते हो तो बीस हज़ार दीनार देने होंगे। नहीं तो, इससे कम में नहीं बेचूँगा।"

यह सुन कर तीनों युवक गधे को ध्यान से देखते हुए बोले— "इस गधे को देख कर अब हमें शक हो रहा है कि जिस गधे को हम बहुत दिनों से ढूंढ रहे हैं, वह यही है या नहीं। इसलिए इसे तुम ही रख लो।"

इतना कह कर वे युवक वहाँ से चले गये।

इस पर महाजन को बहुत गुस्सा आ गया। वह चीख़ता हुआ बोला— "तुम लोग गधे की कीमत दस हज़ार और दो सौ दीनार अधिक देकर ही गधे को ले जाओ।"

युवकों ने जाते-जाते कहा— "हमने तो कह दिया कि गधा आप ही रखिये। यह हमारे काम का नहीं है।"

महाजन युवकों के पीछे दौड़ता हुआ आया और रास्ते में जाते हुए बुजुर्गों को रोकते हुए कहा— "इन युवकों को तो समझाओ ! ये हमारा दस हज़ार दो सौ दीनार लेकर भाग रहे हैं।"

कुछ बुजुर्गों और कई मुसाफिरों ने महाजन को घेर कर पूछा— "क्या बात है ?"

महाजन ने उन तीनों युवकों की ओर इशारा करके कहा— "इनके कहने पर इन लोगों के वास्ते मैंने दस हज़ार दीनार देकर गधा खरीदा। अब ये लोग मेरे यहाँ से वह गधा खरीदने को तैयार नहीं हैं।"

इस पर भीड़ में से एक हँसता हुआ बोला— "क्या तुमने दस हज़ार में गधा खरीदा ? पागल तो नहीं हो गये हो ?" यह सुन कर सभी लोग महाजन को बेवकूफ समझ कर उस पर हँसने लगे।

उन युवकों ने उस महाजन को अच्छा गधा बनाया।

ब्रह्मराक्षसी का उपकार

कमलपुर नामक गाँव में एक युवक रहता था। नाम था वीरेश। वह बुद्धिमान होने के साथ-साथ स्वभाव का भी अच्छा था। लेकिन आलसी और गरीब था।

ज़मीन-जायदाद और दौलत के नाम पर उसके पास सिर्फ़ एक झोंपड़ी तथा उसके आस-पास की थोड़ी-सी ज़मीन थी। दहेज देने में असमर्थ एक गरीब पिता ने अपनी कन्या का विवाह वीरेश के साथ कर दिया।

उसकी पत्नी का नाम मैथिली था। ससुराल आते ही मैथिली ने अपने पति का आलस दूर करने के लिए बहुत प्रयत्न किया। लेकिन वीरेश में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। आखिर उसने खुद ही झोंपड़ी के चारों ओर की खाली ज़मीन में कुछ केले और नारियल के पौधे लगा दिये, और सब्ज़ी भी बो दी।

कुछ समय के बाद केले में घौद लग गये और पकने भी लगे। अब उसे शहर में ले जाकर बेचने की जिम्मेदारी वीरेश की थी। इच्छा न होते हुए भी केले के घौदे कन्धे पर लेकर वह शहर की ओर चल पड़ा।

चलते समय मैथिली ने पति को समझाते हुए कहा— "अजी, सुन लो तो, शहर से लौटते वक्त तुम रास्ते में किसी पेड़ के नीचे मत सोना और अन्धेरा होने से पहले ही घर चले आना।" वीरेश 'अच्छा' कह कर चला गया।

उसने शहर के बाज़ार में जाकर घौदे बेच दिये। बिक्री के पैसे में से एक चवन्नी की मिठाई खा ली और बाकी पैसों को कमर में खोंस लिया।

लेकिन तभी उसे यह ख्याल आ गया कि मैथिली रोज टूटे हुए दर्पण में अपना चेहरा देखती है। उसकी इच्छा हुई कि मैथिली के लिए एक नया दर्पण खरीद ले। इसलिए दो रुपये में उसने एक दर्पण खरीद लिया और हिफाजत से उसे अपनी थैली में रख लिया, तब

रामचंद्र त्रिपाठी

वह अपने गाँव की ओर चल पड़ा ।

उसके गाँव में जाने के दो रास्ते थे—एक लम्बा और चक्करदार था और दूसरा छोटा और सीधा, मगर एक नहर और घने जंगल से भरा हुआ । जल्दी घर पहुँचने की इच्छा से वीरेश ने छोटा, पर खतरनाक रास्ता पकड़ लिया ।

उसने तैर कर नहर पार कर लिया और अब जंगल पार करने लगा । तब तक दोपहर हो चुकी थी । आराम करने के लिए एक घने इमली के पेड़ के नीचे जैसे ही वह बैठा कि उसे नींद आने लगी । दर्पण को बगल में रख कर वह सो गया ।

उस पेड़ पर एक ब्रह्मराक्षसी रहती थी । उस समय वह भी गहरी नींद में सो रही थी । थोड़ी देर के बाद जब धूप दर्पण पर पड़ी तो उसका प्रतिबिम्ब ब्रह्मराक्षसी के चेहरे पर पड़ने से उसकी नींद टूट गई ।

नींद टूटते ही जैसे उसकी नज़र पेड़ के नीचे लेटे वीरेश पर पड़ी, वैसे ही वह क्रोध में गरज़ कर बोली— "अरे ! मेरे पेड़ के नीचे यह कौन सो रहा है ? किसकी ऐसी यह हिम्मत है ?" यह कहती हुई वह नीचे कूद पड़ी ।

वीरेश चौंक कर उठ बैठा । उसके सामने लम्बी जटाओं और बड़े-बड़े जबड़ों वाली एक ब्रह्मराक्षसी खड़ी थी । उसे देख कर वीरेश डर गया और झट उसने आइने से अपना मुख ढक लिया ।

आइने के सामने का भाग ब्रह्मराक्षसी की ओर था और उस पर उसके चेहरे का प्रतिबिम्ब पड़ रहा था । अपने चेहरे की तरह एक और चेहरा देख कर ब्रह्मराक्षसी ने सोचा कि पेड़ के नीचे एक और ब्रह्मराक्षसी है । वह तालियाँ बजाती हुई बोली— "यह कैसा अद्भुत है ! इसका शरीर तो मानव जैसा है और सिर ब्रह्मराक्षस का है ।" फिर उसने वीरेश को सम्बोधित करके कहा— "तुम तो मेरे समान ब्रह्मराक्षसी हो, फिर तुमने यह विद्या कहाँ से सीख ली कि शरीर को मानवों की तरह बना लिया ।"

यह सुनकर वीरेश ने आइना अपने चेहरे पर से हटा लिया । आइना हटते ही ब्रह्मराक्षसी

हैरान होती हुई बोली— "अरे ! अब तुम्हारा चेहरा भी मनुष्य जैसा हो गया ! तुम अब चाहो तो अभी से ही मनुष्यों के बीच अपने दिन बिता सकती हो। मेरे मन में भी मनुष्यों के साथ रहने की बड़ी लालसा है ! क्या तुम मुझे भी मानव रूप में बदल सकती हो ? तुम्हारे इस उपकार को मैं कभी भूल नहीं सकती ।"

ब्रह्मराक्षसी की इस तरह की बातें सुन कर वीरेश को आश्चर्य हो रहा था । लेकिन वह अच्छी तरह समझ रहा था कि यदि उसने बुद्धिमानी से काम नहीं लिया तो उसकी जान खतरे में है । तुरत उसने एक उपाय सोच ही लिया ।

उसने सोचा कि मुझे तो लोग आलसी समझते हैं । मैं भले ही इस ब्रह्मराक्षसी को मनुष्य न बना सकूँ, लेकिन यदि इसके क्रूर स्वभाव को बदल कर इसे मनुष्यों के बीच ले जाऊँ तो निश्चित ही लोग मेरी प्रशंसा करेंगे ।

ऐसा मालूम होता है कि यह ब्रह्मराक्षसी मनुष्यों की हानि करने वाली नहीं है । इसलिए मुझे बड़ी सूझ-बूझ और हिम्मत से काम लेना होगा ।

यों विचार कर वीरेश ने प्रसन्नता का अभिनय करते हुए ब्रह्मराक्षसी से कहा— "मैं तुम्हें अवश्य मनुष्य के रूप में बदल दूँगा । लेकिन इसके पहले तुम्हें मनुष्य की आदतें सीखनी होंगी । तुम्हें अपना क्रूर और कठोर स्वभाव छोड़ कर कोमल और मधुर स्वभाव अपनाना होगा । तब अन्त में तुम्हारा रूप भी मनुष्य जैसा हो जायेगा ।"

ब्रह्मराक्षसी यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुई । उसने उत्साह में आकर कहा— "मैं तुम्हें वचन देती हूँ कि जो कुछ तुम कहोगे, मैं सब सीख लूँगी ।"

वीरेश ने ब्रह्मराक्षसी को मानवों के रिश्ते, आचार-विचार और शिष्टाचार समझा कर कहा— "मैं प्रतिदिन सन्धया के समय यहाँ पर आ जाया करूँगा । पर याद रखो, तुम्हें मनुष्य के रूप में बदलने में कम से कम छः महीने लगेंगे ।"

ब्रह्मराक्षसी को इस प्रकार समझा-बुझा कर

अन्धेरा होते देख वीरेश घर की ओर चल पड़ा। मैथिली उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वीरेश को रात होते ही घर आते देख कर बहुत प्रसन्न हुई। अपने लिए नया दर्पण पाकर वह फूली न समाई। वीरेश ने ब्रह्मराक्षसी की बात मैथिली से यह सोच कर गुप्त रखी कि वह ऐसी बात सुन कर डर जायेगी। साथ ही उस को दूसरे दिन से जंगल में जाने से मना करेगी। उस ने तो ब्रह्मराक्षसी को वचन दे रखा था, जंगल में न जाने से उस का वचन भंग होगा और वह ब्रह्मराक्षसी को एक मनुष्य के रूप में बदल न सकेगा।

यही सब सोच कर वीरेश दूसरे दिन शाम को पत्नी को यह कह कर घर से बाहर चला गया कि जल्दी ही लौट आयेगा। मैथिली अपने आलसी पति को इतना चुस्त देख कर हैरान हो रही थी।

उस दिन वीरेश ने ब्रह्मराक्षसी को मानवों के साज-श्रृंगार के बारे में बताया और रात में बहुत देर से घर लौटा! जाते ही पत्नी ने पूछा—"क्यों, इतनी रात तक कहाँ थे? मैंने तुम्हें लाख बार समझाया था कि जल्दी घर लौट आया करो।" लेकिन बिना उत्तर दिये बहुत थके होने का बहाना बना कर वीरेश तुरत सो गया।

दूसरे दिन वीरेश ब्रह्मराक्षसी में बहुत परिवर्तन देखकर चकित रह गया। उसने मनुष्यों की तरह साज-श्रृंगार कर लिया था। अपने लम्बे-लम्बे नाखून काट लिये थे तथा नहर में नहा कर अपनी वेणी में पलास के फूल भी

खोंस रखे थे ।

वीरेश ने उसकी प्रशंसा करते हुए समझाया— "तुम्हें अभी बहुत बातें सीखनी है । मुझे यह देख कर बड़ी खुशी होती है कि तुम मेरी बातों को अच्छी तरह से समझ कर उनको अमल करने में बड़ी रुचि दिखाती हो !" इसके बाद उसने मनुष्यों के मधुर और स्नेहपूर्ण वार्तालाप के बारे में समझाया । यह भी बताया कि उसे मनुष्यों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए ।

दूसरे दिन भी जब वीरेश देर से घर लौटा तो उसकी पत्नी क्रोधित होकर बोली— "यह बात तो ठीक है कि तुम्हारा आलस धीरे-धीरे दूर हो रहा है लेकिन यह तो बताओ कि रात को इतनी देर तक कहाँ रहते हो और क्या करते हो ? आखिर इस देरी का क्या कारण है ? कोई काम-धन्धा तो करते नहीं, पर इतनी देर तक घर से बाहर रहते हो, तो, कुछ न कुछ करते होगे । उस काम का भी कोई फल मैं देखती नहीं हूँ ।"

मैथिली क्रोध में डाँटती-फटकारती रही लेकिन वीरेश कुछ न बोला और उसकी हर बात सहता रहा । जैसे-जैसे वीरेश की चुप्पी और सहनशीलता बढ़ती गई वैसे मैथिली का सन्देह भी बढ़ता गया । अन्त में उसने यह निश्चय कर लिया कि वह इस रहस्य को जान कर दम लेगी ।

इसलिए वह एक दिन इमली की एक छड़ी लेकर चुपचाप वीरेश के पीछे-पीछे चल पड़ी । वीरेश सीधे एक जंगल में पहुँचा । वह जंगल अत्यंत डरावना था । उसमें खूँख्वार जानवरों के

गर्जन सुनाई दे रहे थे। वह एक दम डर गई। फिर भी वह अपने पति के इस रहस्य का पता लगाना चाहती थी। इसलिए वह भी हिम्मत बटोर कर अपने पति की आँख छिपा कर उसके पीछे चलती गई। आखिर वीरिश को बड़ी हिम्मत के साथ ब्रह्मराक्षसी के निकट जाते देख वह डर गई और एक झाड़ी के पीछे छिप गई।

ब्रह्मराक्षसी ने वीरिश से कहा— "तुमने मुझे अच्छी तरह मनुष्यों की आदतें सिखा दी हैं। अब मुझे उनकी तरह गाने की विधि सिखाओ! कई दिनों से मेरे मन में मनुष्यों की तरह मधुर स्वर में गाने की लालसा भरी हुई है। आखिर संगीत से कौन प्यार नहीं करता? संगीत सीखने से मेरा समय भी अच्छी तरह से कटेगा और मुझे मानसिक आनन्द भी प्राप्त होगा!"

ब्रह्मराक्षसी की ऐसी जिज्ञासा देख कर वीरिश बहुत खुश हुआ और एक गीत गाकर सुनाने लगा। ब्रह्मराक्षसी उसका अनुसरण करके गाने लगी।

यह सब देख कर मैथिली का डर भी जाता रहा और इमली की छड़ी लिए झाड़ी में से निकलती हुई बोली— "अच्छा, तो इतने दिनों से तुम यही कर रहे हो! मैं तो सोच रही थी कि तुम्हारा आलस छूट रहा है। तुम्हारी तो बाद में खबर लूँगी, पहले तुम्हारी चेली की खबर ले लूँ।" यह कह कर मैथिली ब्रह्मराक्षसी पर इमली की छड़ी से प्रहार करने लगी।

ब्रह्मराक्षसी चिल्लाती हुई भागी-"बचाओ, बचाओ! मुझे मारनेवाली ब्रह्मराक्षसी कहाँ से आ गई?"

उस समय मैथिली का विकराल रूप देख कर वीरिश भी इतना डर गया जितना वह पहली बार ब्रह्मराक्षसी से भी नहीं डरा था। इसलिए वह भी पत्नी के डर से ब्रह्मराक्षसी के पीछे-पीछे भाग गया।

वीरिश ने अपनी पत्नी की कहानी सुनाते हुए कहा— "मनुष्य कभी-कभी ब्रह्मराक्षस की तरह भी व्यवहार करने लगता है और तब वह राक्षस से भी अधिक कठोर और क्रूर बन जाता है।"

यह सुन कर ब्रह्मराक्षसी बोली— "फिर

मुझे मनुष्य की तरह बनने की क्या जरूरत है ? इस नारी को देख कर अब मनुष्यों के बीच जीने की कोई इच्छा नहीं रही। अब मैं ऐसी जगह रहना चाहती हूँ, जहाँ कोई मनुष्य दिखाई न दे।" यह कहती हुई वह जंगल में विलीन हो गई ।

अब वीरेश वहाँ अकेला रह गया और सोचने लगा कि क्या करे, अभी घर लौट जाये या सवेरा होने तक यहीं बैठे रहे। अभी वह सोच ही रहा था कि अपने सिर पर लकड़ियों का गट्ठर लिए बूढ़ा दादा गंगाराम आ निकला।

उसने इतनी रात को वीरेश को जंगल में देख कर आश्चर्य से पूछा— "अरे आलसी वीरेश ! बताओ, इस समय तुम यहाँ पर क्या कर रहे हो ?"

वीरेश ने डरते-डरते सारा वृतांत बूढ़े दादा को सुना कर पूछा— "बताओ दादा ! क्या इसमें मेरा कोई क़सूर है !"

गंगाराम थोड़ी देर मौन रहा, फिर बोला— "आज तक तुम आलसी बने हुए हो और रोजी-रोटी के लिए कोई काम-धन्धा नहीं करते-यह तुम्हारा पहला क़सूर है। तुम्हारा दूसरा क़सूर यह है कि तुमने ब्ररह्मराक्षसी को मनुष्य की तरह बनाना चाहा ।

"अब तुम्हारे अन्दर निवास करने वाले आलस की ब्रह्मराक्षसी भाग गई है। अब तुम कोई काम-धन्धा सीख कर जीने की कला सीख लो ।"

तभी उसकी आँखों के सामने अपने अहाते में लगे केले, नारियल और सब्जी के खेत का चित्र फैल गया। उसने यह भी महसूस किया कि उसकी पत्नी ने घर का सारा काम-धन्धा करते हुए किस प्रकार यह सारा काम किया होगा, और अब भी कितना परिश्रम से यह सब कर रही है ।

उसने गंगाराम से कहा— "दादा ! तुम्हारा कहना बिल्कुल सही है। अब तुम देख लेना कि वीरेश कितना योग्य व्यक्ति है। ब्रह्मराक्षसी ने मेरा आलस्य दूर कर मेरा बहुत बड़ा उपकार किया है ।"

बुढ़ापे का अधिकार

अमरावती के निवासी कई वर्षों तक कई नगरों में नौकरी करने के बाद अवकाश ग्रहण करके अपने गाँव लौट आये। वे प्रतिदिन शाम को चौपाल में बैठकर अपने-अपने अनुभवों की चर्चा किया करते थे।

एक दिन जब वे अपनी अपनी दुनियादारी की बातें कर रहे थे, एक बालक ने आकर एक बूढ़े से पूछा— "दादा जी ! आज रात को कैसी तरकारी बनेगी, माँ और दादी आप से पूछ रही हैं।"

इस पर उस बूढ़े ने अपनी मूँछों पर ताव देते हुए सबसे कहा— "देखते हो न तुम लोग मेरे घर की मर्यादा ! मेरे हुक्म के बिना मेरे घर में कोई काम नहीं होता।"

इसके बाद वहाँ पर बैठे अन्य बूढ़े भी अपने परिवार और बच्चों पर अपने रोब और अधिकार की डींग हाँकने लगे।

इनकी बातें सुन कर एक वृद्ध व्यक्ति, जो अब तक मौन बैठा था, उठ कर चलने लगा। इस पर सब ने उसे रोकते हुए पूछा— "आपने अपनी बात नहीं बतायी ! क्या आप के घर में आप का अधिकार नहीं चलता ?"

"दर असल आज तक मैंने यह जाना ही नहीं कि घर में अधिकार और हुक्म चलाना कोई विशेष बात है।" यह कहता हुआ वह व्यक्ति अपने घर की ओर चला गया।
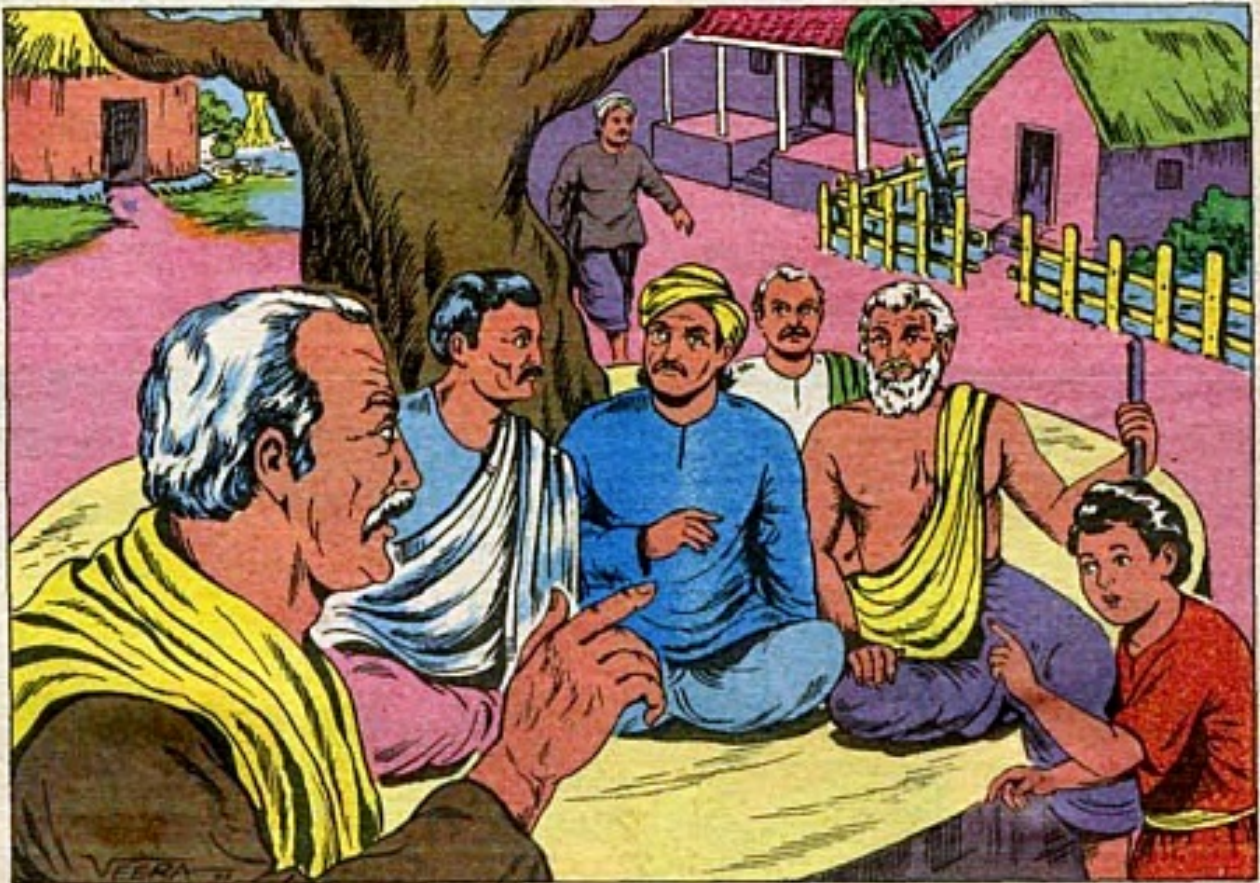
श्री रामचंद्र जी ने कोदण्ड की प्रत्यंचा सहज ही चढ़ा दी। इस पर परशुराम बोले— "हे रघुराम, मैं आज से क्षत्रियों के प्रति अपनी प्रतिकार की भावना को त्याग कर शांतिपूर्वक तपस्या करूँगा। मैंने जो कोदण्ड दिया है, वह आपका ही है। आप कोदण्ड राम हैं।" यह कह कर परशुराम वहाँ से चले गये।

अयोध्या नगर नव दम्पति के आगमन से शोभायमान हो उठा। सीता और रामचंद्र जी परस्पर अत्यधिक अनुराग के साथ जीवन बिताने लगे।

एक दिन रामचंद्र जी ने सीता जी से कहा— "जानकी, इस राजमहल की अपेक्षा यदि हम सुंदर वनों में विहार करते होते तो क्या ही अच्छा होता? तुम वन लक्ष्मी की भांति दिखाई देती..." रामचंद्र की बातें पूरी भी न हो पायी थीं कि सीता जी के कपोल लाल हो उठे।

उनके दिन अत्यंत सुख पूर्वक बीत रहे थे। थोड़े दिन बाद दशरथ के सामने अपशकुन दीखने लगे। उल्कापात दिखाई देने लगे। उन्हें वृद्ध मुनि दंपति की बातें याद हो आयीं। प्राण का डर उन्हें सताने लगा।

उन्होंने श्री रामचंद्र जी का राज्याभिषेक करने का निश्चय किया और वसिष्ठ के द्वारा मुहूर्त भी निश्चित करवाया।

उधर सत्यलोक में ब्रह्मा पद्मासन में सच्चिानन्द में लीन थे। सरस्वती जी वीणा पर रागमाला का आलापन कर रही थीं।

(श्रीराम का वनवास)

वागदेवी ! न मालूम आप जगत के कल्याण के हेतु मंथरा के मुंह से कैसे वचन प्रकट करवायेंगी ! यह सब आपकी कृपा पर ही निर्भर है ।" यों कह कर नारद वहाँ से चल पड़े । उनके पीछे देवता भी चले गए ।

कुबड़ी मंथरा कैकेयी के साथ उनके मायके से आयी हुई बूढ़ी दासी थी । वह कैकेयी की ओर सहानुभूति पूर्ण दृष्टि से देख रही थी ।

कैकेयी ने मंथरा से पूछा— "मंथरा, क्या बात है ? तुम उदास क्यों खड़ी हो ?"

"महारानी जी, क्या बताऊँ ? सुनते हैं, कल श्री रामचंद्र जी का राज्याभिषेक होने वाला है ! राज्याभिषेक ?" मंथरा ने कहा ।

कैकेयी अपने कंठ से मोतियों की माला उतारकर मंथरा के कंठ में पहनाती हुई बोली— "अरी, तुम कैसी खुश खबरी लाई हो ?" यों कह कर वह आनंद विभोर हो उठी ।

मंथरा नाक-भौं सिकोड़ती हुई बोली— "आप कितनी भोली-भाली हैं !"

"मंथरा, यह तुम क्या कहती हो ?" कैकेयी ने पूछा ।

"अगर रामचंद्र जी राजा बन बैठे तो हम और आप दोनों कौसल्या की दासियाँ बन जायेंगी । आप अच्छी तरह से सोच लीजिए । देर न कीजिए । कोप गृह में चले जाइये । अपने दोनों वर इसी वक्त मांग लीजिए । भरत को

नारद और उनके पीछे देवता संभ्रम के साथ वहाँ आ पहुँचे । नारद ने ब्रह्मा जी से पूछा— "भगवन ! रामचंद्र जी सिंहासन पर बैठेंगे तो राक्षसों का संहार कैसे होगा ? यह सोच कर देवता सब परेशान हैं ।" ब्रह्मा ने सरस्वती की ओर दृष्टि दौड़ाई । सरस्वती मंदहास करके बोली— "जो होना है, सो होकर ही रहेगा । हे नारद, तुम तो त्रिकाल ज्ञानी हो ! देखो, कलह पैदा करने में तुम्हारी वारिस बनी मंथरा कैकेयी के महल में जा रही है ।"

इस पर देवता और नारद ने नीचे पृथ्वी की ओर देखा । मंथरा अपने कुबड़े को ढोते मन ही मन गुन-गुनाते चली जा रही थी ।

नारद सरस्वती से बोले— "हे माता

जन्म आपने क्यों दिया ? क्या रामचंद्र जी के सामने चँवर डुलाने के लिए ?" यों मंथरा ने कैकेयी को उकसाया ।

इस पर कैकेयी ने दशरथ से अपने दोनों वर मांग लिये । दशरथ ने कहा— "अच्छी बात है, तुम जो वर चाहती हो, मांग लो ।"

कैकेयी ने कहा— "एक तो रामचंद्र चौदह वर्ष के लिए बनवास करें । और दूसरा भरत का राज्याभिषेक किया जाये ।"

कैकेयी के मुँह से ये बातें सुनते ही दशरथ अपने बाल नोचते हुए शय्या पर गिर पड़े ।

"पिताजी की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्तव्य है । पिताजी पर यह कलंक कभी नहीं लगना चाहिए कि वे वचन का पालन करने वाले नहीं हैं । रघुवंश में आज तक ऐसी बात नहीं हुई है । और न होनी चाहिए ।" रामचंद्र जी मन ही मन सोचने लगे । अपने पिताजी के वचन का पालन करने के हेतु रामचंद्र जी वल्कल धारण कर वनवास के लिए तैयार हो गये ।

उसी समय लक्ष्मण क्रोध से लाल चेहरा लिए इस तरह आ पहुँचे जैसे नागराज फुतकार करता हुआ झपटने को तैयार हो । उन्होंने कैकेयी तथा दशरथ का वध करने के लिए तलवार खींच ली । इस पर श्री रामचंद्र ने लक्ष्मण को समझा कर शांत किया ।

इसके बाद राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी वनवास के लिए चल पड़े ।
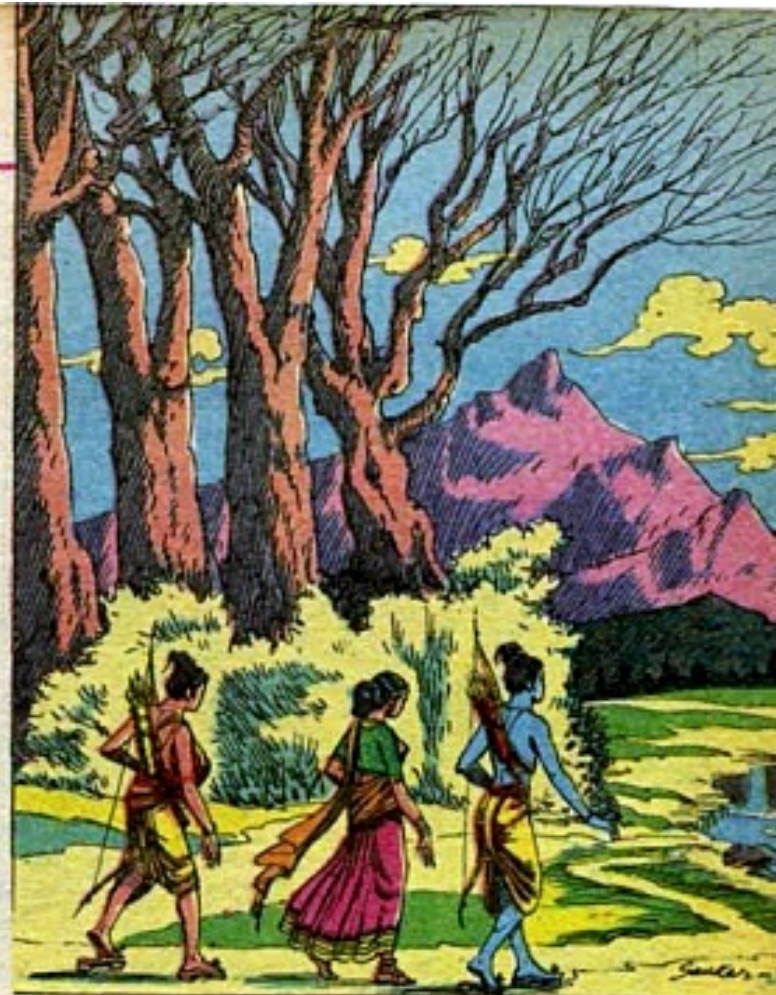
अयोध्या के नागरिक उनका रास्ता रोकते हुए मार्ग में लेट गए । रामचंद्र जी ने उन्हें समझाकर मार्ग से हटाया । इस प्रकार वे आगे बढ़ते हुए गंगा को पार कर जंगल के रास्ते से हो कर भारद्वाज मुनि के आश्रम में पहुँचे ।

राम और लक्ष्मण ने बरगद के दूध का बालों पर लेप करके मुनियों की भांति जटाएं बना लीं ।

दशरथ ने होश में आने के बाद रामचंद्र के वनवास का समाचार जान कर राम नाम रटते-रटते अपने प्राण त्याग दिये ।

उस समय भरत और शत्रुघ्न अपने ननिहाल में नंदिग्राम थे । नंदिग्राम से भरत और शत्रुघ्न ने

शूर्पणखा को खर और दूषण की मृत्यु का समाचार सुनाया ।

शूर्पणखा, रावणासुर की बहन थी । खर और दूषण शूर्पणखा के सहोदर भाई थे ।

दण्डकारण्य में घूमने वाले राक्षसों की शूर्पणखा अधिनायिका थी । वह राम-लक्ष्मण का संहार करने के लिए चल पड़ी ।

पांच विशाल वट वृक्ष वाले पंचवटी प्रदेश पर रामचंद्र जी, सीता और लक्ष्मण समेत पहुँचे । उस के पास में ही दक्षिणी गंगा कहलाने वाली गोदावरी नदी बह रही थी ।

एक सुन्दर पर्णकुटी बना कर रामचंद्र सीता जी के साथ वन विहार करते वनवास करने लगे । लक्ष्मण भाई और भाभी की सेवा करते हुए दिन-रात पर्णशाला की रक्षा करने लगे ।

एक दिन शूर्पणखा अट्टहास करती हुई उनके सामने प्रकट हुई । पहले उसने रामचंद्र जी से निवेदन किया कि वे उसका वरण कर लें और अंत में धमकी भी दी । फिर सीताजी का संहार करने के लिए तैयार हो गयी । लक्ष्मण ने क्रोध में आकर उसकी नाक और कान काट कर उसे भगा दिया ।

शूर्पणखा ने लंका में जाकर रावणासुर से अपने अपमान की शिकायत की । सीता जी की सुंदरता की प्रशंसा कर के उसको भड़काया । इसका बदला लेने के लिए मारीच को सोने के हिरण के रूप में भेजा ।

सीता उस जादूवाले हिरण को देख मुग्ध हो उठी । रामचंद्र जी ने उस पर बाण चला कर पकड़ने की कोशिश की । बाण की चोट खा कर जादूवाला हिरण मारीच के रूप में बदल गया और राम के स्वर में 'हे, सीते ! हे लक्ष्मण !' चिल्लाते हुए दम तोड़ दिया ।

यह आवाज़ सुनकर सीता जी घबरा उठीं । लक्ष्मण ने सीता जी को अनेक प्रकार से समझाया कि रामचंद्र जी को कभी कोई हानि न होगी । यह राक्षसों की माया है । यों लक्ष्मण के समझाने पर भी सीता जी ने एक न सुनी । आखिर सीता जी ने लक्ष्मण को कटु वचन सुनाये । इस पर लक्ष्मण पर्ण कुटी के सामने तीन रेखाएँ खींच कर और सीता को इसके आगे
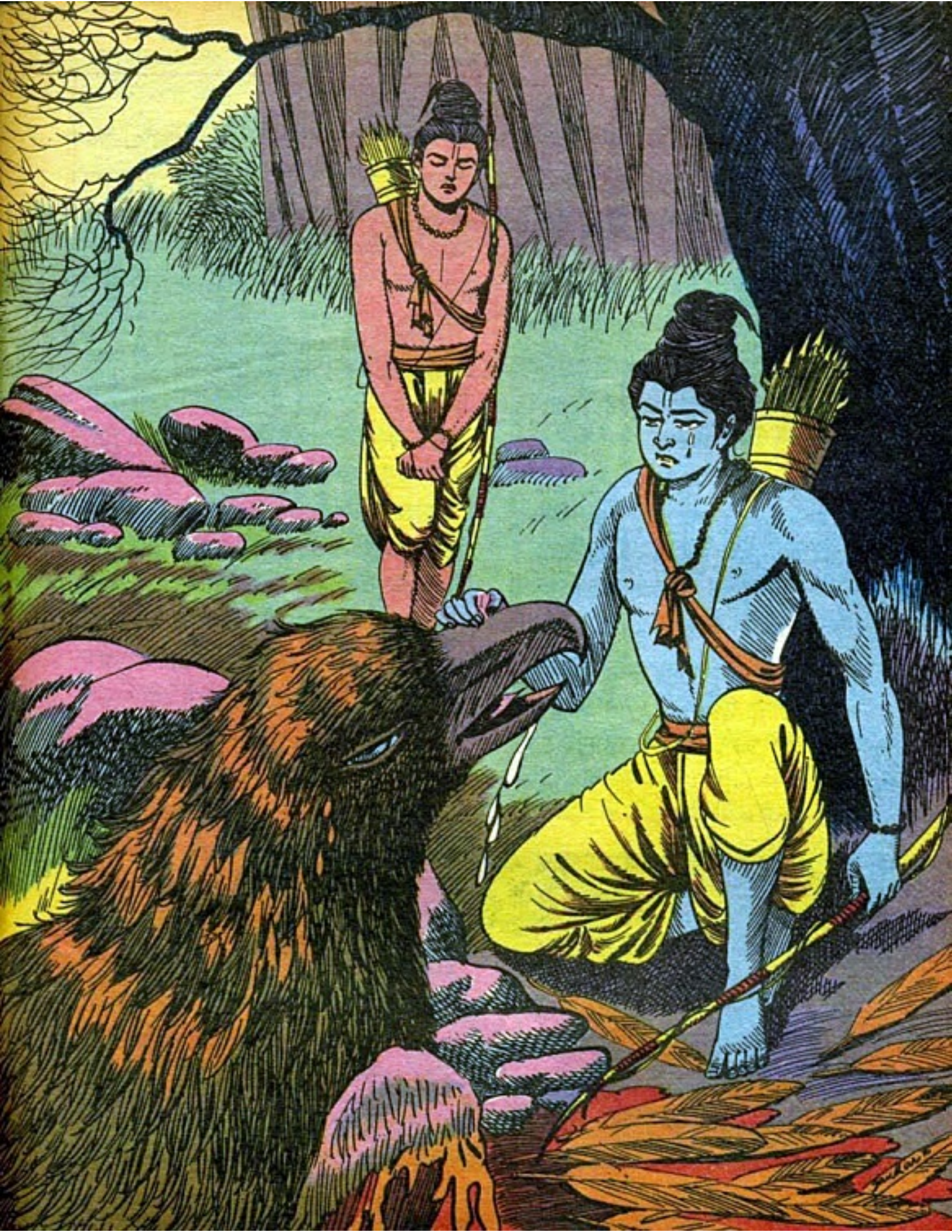
को फल समझ कर निगल लिया था। इस पर इंद्र ने कुपित हो कर उस पर वज्रायुध का प्रहार किया। मारुति बेहोश हो गए। वायुदेव दुखी किन्तु स्तम्भित थे, इस पर देवताओं ने हनुमान को चिरंजीवी बने रहने का आशीर्वाद दिया और उन्हें कई वर दिये।

ब्रह्मा ने हनुमान को विचित्र प्रकार के कर्ण कुण्डल दे कर समझाया— "इन कुण्डलों को जो व्यक्ति पहचान कर प्रशंसा करेंगे उन्हीं को तुम विष्णु समझ कर अपने आराध्य देवता के रूप में उनकी सेवा करना।"

सुग्रीव के आदेश पर हनुमान ब्रह्मचारी के रूप में रामचंद्र जी के पास पहुंचे। रामचंद्र जी ने हनुमान को देखते ही लक्ष्मण से कहा— "देखते हो न, सुंदर आकृति वाले इसके कर्ण-कुण्डल कैसे अनोखे लगते हैं।"

हनुमान विष्णु के अवतार को पहचान कर उनके विश्वास पात्र सेवक बने। रामचंद्र के द्वारा सुंदर कहलाने वाले हनुमान सचमुच सुंदर कहलाए।

हनुमान के कारण सुग्रीव और रामचंद्र जी अग्नि को साक्षी बना कर मित्र बन गए।

सुग्रीव के भाई बाली किष्किन्धा के राजा थे। अपने छोटे भाई को गलतफहमी के कारण द्रोही मान कर बाली उन्हें मारने के लिए दौड़े। इस पर सुग्रीव ने भाग कर ऋष्यमूक पर्वत की शरण ली। बाली ने अपने छोटे भाई की पत्नी को क़ैद में रखा।

विपदा में रहने वाले अपने मित्र की रक्षा करना अपना कर्तव्य समझकर रामचंद्र जी ने सुग्रीव को वचन दिया कि वे बाली का वध करके उसको किष्किन्धा का राजा बनायेंगे।

बाली को यह वरदान प्राप्त था कि उसके सामने जो भी खड़ा होगा, उसकी आधी शक्ति बाली के अंदर आ जाएगी।

इस कारण रामचंद्र जी को भी बाली का वध करने के लिए पेड़ की ओट से छिप कर बाण चलाना पड़ा। एक दिन जब बाली और सुग्रीव लड़ रहे थे, तब रामचंद्र ने अपने मित्र सुग्रीव की रक्षा के लिए बाली का संहार कर दिया।

(...क्रमशः)
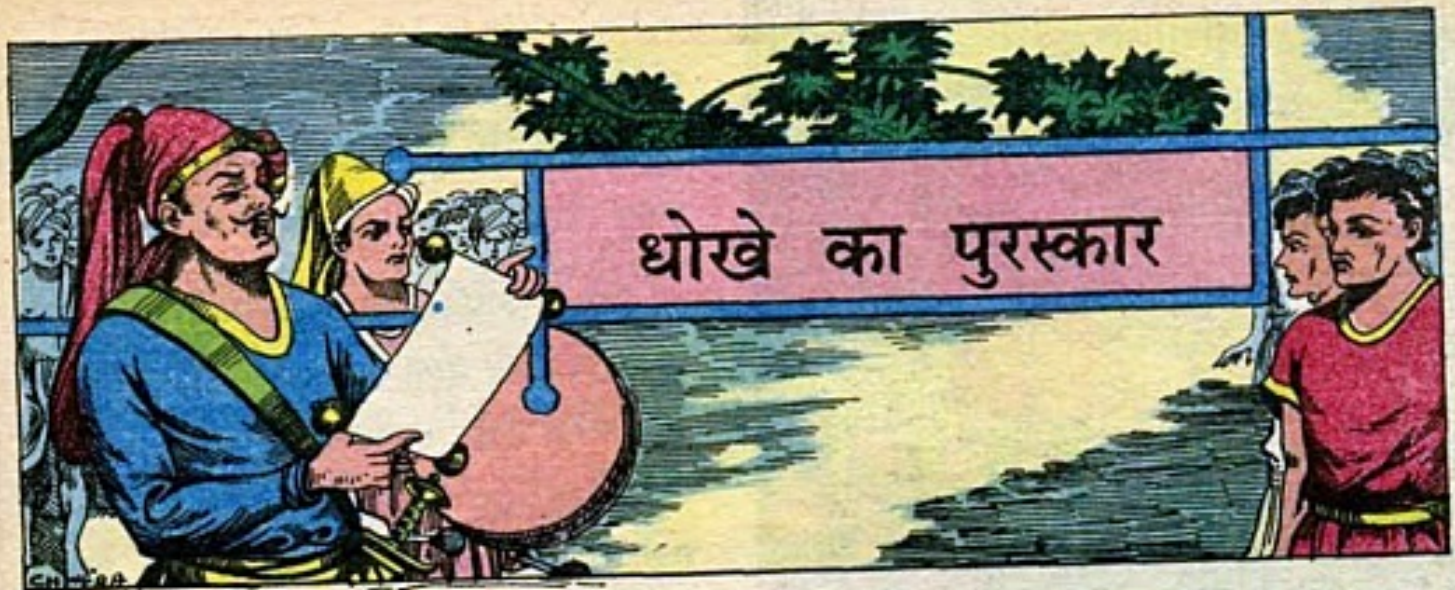
किसी देश में एक राजा रहता था। उनकी इकलौती बेटी बड़ी सुन्दर थी। इसलिए अनेक राजकुमार राजकुमारी से विवाह करने के लिये राजा के पास आने लगे। कई अयोग्य युवक भी राजा को धोखा देकर राजकुमारी को प्राप्त करने की कोशिश करने लगे।

राजा बड़ा ही समझदार था। उसको कोई धोखा नहीं दे सकता था। उन्होंने अपनी पुत्री के योग्य वर का चुनाव करने के लिये एक उपाय सोचा। उन्होंने राज्य भर में ढिंढोरा पिटवा दिया— "राजा को दगा देने वालों के साथ राजकुमारी का विवाह कर के उसे आधा राज्य भी दे दिया जाएगा। पर राजा को दगा देने की कोशिश कर के उस में असफल होकर पकड़े जाने वालों को कोड़े की मार सहनी पड़ेगी। इस शर्त को मानने वाले युवक अपनी क़िस्मत को अजमा सकते हैं।"

राजकुमारी के साथ विवाह करने की इच्छा रखने वाले कई युवक राजधानी में आये, पर असफल हो कर कोड़े खाकर वापस चले गये।

उस नगर में एक धनवान व्यक्ति रहता था। उसके तीन पुत्र थे। उनमें बड़े दोनों बेटे बहुत अक्लमंद थे। तीसरा देखने में और व्यवहार में भी नालायक जैसा लगता था। वह कभी कोई काम नहीं करता बल्कि हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा करता था। उसको सभी लोग मंदबुद्धि कहकर पुकारते थे।

धनवान के ज्येष्ठ पुत्र ने एक दिन अपने पिता से पूछा— "पिताजी, सभी युवक राजकुमारी के साथ विवाह करने की कोशिश कर रहे हैं। इसके वास्ते आप मुझे अनुमति के साथ आशीर्वाद देंगे तो मैं भी प्रयत्न करूँगा।"

"अवश्य प्रयत्न करो, जिन युवकों ने कोशिश की वे तुम से ज़्यादा समझदार थोड़े ही हैं। कोई भी व्यक्ति लगन के साथ प्रयत्न किये

२५ वर्ष पहले चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

बिना अपने कार्य में सफल नहीं हो सकता। मैं तुम को आशीर्वाद देता हूँ। तुम इसी वक्त जाकर अपने भाग्य की परीक्षा दो।" पिता ने कहा।

ज्येष्ठ पुत्र ने राजा के दर्शन करने की इच्छा प्रकट करते हुए अपने आने का कारण बताया। राजभट उसको राजा के पास ले गये। वह युवक राजा को प्रणाम कर के खिड़की में से बाहर झाँकते हुए बोला— "ओह, वे तीनों काले बतखें कितने सुन्दर हैं ?"

"तुम्हारी अक्लमंदी तुम्हारे मोटे दिमाग का परिचय दे रही है। देखने के लिये क्या एक काला बतख काफी नहीं है ? इसको ले जाकर कोड़े से मार कर भेज दो।" राजा ने कहा। ज्येष्ठ पुत्र मार खाकर अपना चेहरा लटकाए घर लौटा, इस पर दूसरे बेटे के मन में भी यही इच्छा पैदा हुई।

वह भी अपने पिता की अनुमति पाकर राजा के दर्शन करने चला गया। उसको भी राजभटों ने राजा के दर्शन कराये। उसने खिड़की में से बाहर देखते हुए कहा— "ओह ! यह क्या ? पेड़ पर बैठे कौए की पीठ पर तीन सफ़ेद धार हैं।"

राजा ने कहा— "कौए की पीठ पर सफ़ेद धारों की बात झूठ है। पर तुम्हारी पीठ पर कोड़ों की मार सच है। इस को कोड़े से मारकर भेज दो।"

दूसरा युवक भी पराजित होकर जब घर लौटा तब मंदबुद्धि ने अपने पिता से कहा— "मैं राजा को दगा देकर राजकुमारी के साथ विवाह करूँगा।"

"होशियार और समझदार तुम्हारे दोनों बड़े भाई जब असफल हो कर लौटे तब तुम उनके सामने किस खेत की मूली हो ? तुम तो मंदबुद्धि ठहरे।" पिता ने मंदबुद्धि का मजाक़ उड़ाया।

पर उसने हठ किया। "यदि तुम्हें मार खाने की खुजली है, तो खुशी से जाओ।" पिता ने कहा।

तीसरे बेटे ने दीवार पर खूँटे से लटकनेवाला गंदा टोप निकाला और उसे झाड़ कर हाथ में

लिये राजा के दर्शन के लिये निकल पड़ा। रास्ते में उसे अपने सर पर मिट्टी के बरतनों का ढेर लिये एक युवती मिली।

मंदबुद्धि ने पूछा— "अरी सुनो, ये बरतन तुम कहाँ ले जा रही हो ?"

"बेचने के लिये ले जा रही हूँ।" युवती ने उत्तर दिया। युवक ने उनका मूल्य पूछा। बरतनों वाली स्त्री ने कहा— "इनका दाम तीन रुपये।"

"मैं पाँच रुपये दूँगा। क्या मेरे कहे अनुसार करोगी ?" युवक ने पूछा। युवती ने उसकी बात मान ली। दोनों मिलकर राजमहल में पहुँचे। युवक ने उसे बता दिया कि उसे क्या करना है।

दोनों राजमहल के बाहर रुक गये। मंदबुद्धि ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा— "मैं कभी नहीं बेचूँगा। मुझे अपने लिये इनकी ज़रूरत है। तुम मुझ को मत सताओ।"

युवक की चिल्लाहट सुनकर राजा बाहर आए और कड़क कर उससे बोले— "चीखते-चिल्लाते क्यों हो ? तुम्हारे पास आखिर बेचने को क्या है ? मैं तो कुछ नहीं देख रहा हूँ।"

"महाराज ! यह टोप जादू का है। इसे सर पर रखने से किसी को भी आसानी से दगा दे सकते हैं।" मंदबुद्धि ने उत्तर दिया।

राजा ने पूछा— "हम भी तो आज़मा कर

देखें।" राजा टोप को अपने सिर पर पहन कर बरतन बेचने वाली के समीप पहुँचा और पूछा— "तुम अपने सारे बर्तन फोड़ दो।"

दूसरे ही क्षण वह युवती अपने सर पर के बरतन एक-एक कर ज़मीन पर पटकने लगी।

राजा चकित रह गये। उन्होंने सोचा कि ऐसे टोप का दूसरों के पास होना मेरे और राजकुमारी के लिये भी हितकर न होगा। इसलिए राजा ने उसे अपने हाथ बेचने का आदेश दिया। मन्द बुद्धि ने ज़िद करते हुए कहा— "नहीं, मैं इसे कभी नहीं बेचूँगा।" लेकिन राजा ने जब थैली भर अशर्फ़ियाँ देने का लोभ दिया तो मन्दबुद्धि ने सर खुजलाते हुए कहा— "अच्छी बात है, आखिर इसे किसी के हाथ बेचना ही होगा।"
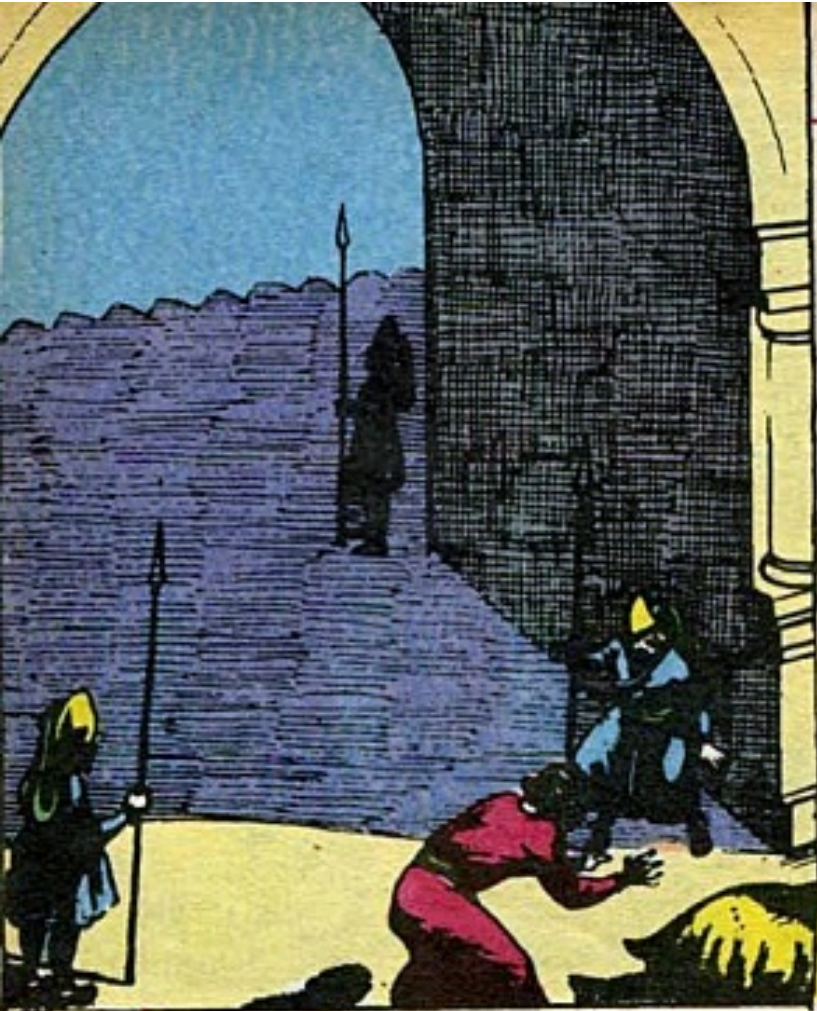
इसके बाद वह राजा के हाथ में टोप देकर अशर्फ़ियों की थैली लिये तुरंत घर चला आया ।

मन्दबुद्धि ने उस धन से क़ीमती पोशाकें खरीदीं और उन्हें पहन कर दूसरे दिन राजा के पास जाकर कहा— "महाराज ! आप अपने वचन के मुताबिक़ अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ कर दीजिए ।"

राजा समझ गये कि टोप में कोई अद्भुत शक्ति नहीं है और मन्दबुद्धि उसे धोखा देने में सफल हो गया है । इसलिए उसने मन्दबुद्धि से कहा— "यदि कल सवेरे तक किसी तरह मंत्री को मेरे पास ला सको तो समझूँगा कि तुम सचमुच चतुर हो ।" मन्दबुद्धि "जी अच्छा हुजूर" कह कर चला गया ।

दूसरे दिन मंत्री अपने घर पर ही रहे । उन्होंने अपने घर के चारों तरफ़ सिपाहियों का पहरा बिठा कर उन्हें आदेश दे दिया कि यदि मन्दबुद्धि आ जाये तो उसे पीट कर वापस भेज दो ।

इधर मन्दबुद्धि ने एक नयी चाल चली । वह एक बोरे में घुस गया और लुढ़कते-लुढ़कते मंत्री के घर के पास पहुँचा । मंत्री के पहरेदारों ने पूछा— "अरे तुम कौन हो ?"

"चुपचाप रहो । शोर न करो ।" बोरे ने जवाब दिया । पहरेदारों ने यह बात जाकर मंत्री को बताई । मंत्री ने भी बाहर आकर गरजते हुए बोरे से वही सवाल किया— "अरे बताओ ! तुम कौन हो ?"

"तुम सब चुपचाप रहो । यह तो ज्ञान का थैला है । मुझे कई बातें बतला रहा है ।" मन्दबुद्धि ने कहा ।

"हम भी तो सुनें । यह तुम्हें क्या बात बता रहा है ?" मंत्री ने फिर सवाल किया ।

"यह थैला बता रहा है कि कल जिस व्यक्ति ने राजा को धोखा दिया है वह आज सत्रह योद्धाओं के साथ आप के घर पर हमला करनेवाला है ।" मन्दबुद्धि ने कहा ।

यह सुन कर मंत्री घबरा गया । उसने मन्दबुद्धि से कहा— "थैले से जल्दी से यह पूछो कि इस खतरे से बचने के लिए हमें क्या करना होगा ?"

"आप यह बात थैले से खुद ही पूछ लीजिए ।" मन्दबुद्धि ने जवाब दिया ।

मंत्री ने थैला खोल कर मन्दबुद्धि को बाहर निकाला और स्वयं उसके अन्दर बन्द हो गया । उसने थैले से पूछा— "बताओ, अब मुझे इस खतरे से बचने के लिए क्या करना चाहिए ?"

इतने में मन्दबुद्धि ने थैले का मुँह बन्द कर दिया और उसे अपने कन्धे पर लाद कर राजा के सामने ले जाकर रख दिया । राजा उसकी चतुराई पर मुग्ध हो गया, लेकिन फिर भी उसकी अन्तिम परीक्षा लेना चाहता था । इसलिए उसने मन्दबुद्धि से कहा— "तुम इस परीक्षा में सफल हो गये हो । कल तुम आ जाओ और यदि अन्तःपुर में जाकर मेरी राजकुमारी को पहचान लो तो उसके साथ तुम्हारा विवाह हो जायेगा । याद रखो कि मेरी राजकुमारी की सेवा में अस्सी परिचारिकाएं हैं और वे सब की सब राजकुमारी की तरह ही सुसज्जित होंगी । यदि तुम मेरी पुत्री को स्वयं न पहचान सके तो तुम्हें कोड़े मार कर भगा दिया जायेगा ।"

दूसरे दिन मन्दबुद्धि एक थैली में एक चूहा लेकर आ गया । अन्तःपुर में राजा अपनी बेटी और उसकी अस्सी परिचारिकाओं के साथ प्रतीक्षा कर रहा था । मन्दबुद्धि अपने सामने अस्सी राजकुमारियों को देख कर घबरा गया ।

उसने अपनी थैली में से चूहे को निकाल कर उन राजकुमारियों के बीच फेंक दिया । उन कन्याओं में से कुछ चीख़ती-चिल्लाती भाग गईं लेकिन एक कन्या बेहोश हो गयी । तुरत वे सभी वापस आ गईं और उस बेहोश कन्या के उपचार में लग गईं ।

मन्दबुद्धि अच्छी तरह से समझ गया कि असली राजकुमारी वही है और उसने राजा को संकेत से बता दिया ।

राजा मन्दबुद्धि की तेज बुद्धि का क़ायल हो गया । उसने एक शुभ मुहूर्त देख कर उसके साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया और उसे आधा राज्य भी दे दिया । वे दोनों सुख पूर्वक अपने दिन बिताने लगे ।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां मार्च १९८४ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

P. V. Subramaniam

M. C. Morabad

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ जनवरी १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

नवंबर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : **ज्ञान-सागर है अपार!**

द्वितीय फोटो : **ले लूं मैं भी बूंदें चार!!**

प्रेषक : **जुल्फ़िकार हैदर, बिरलासी लेन, मुफ्तीगंज, लखनऊ-२२६००३**

क्या आप जानते हैं ? के उत्तर

१. केलिफोर्निया में चार हजार छः सौ वर्ष पुराना यह वृक्ष देवदारु जाति का है। २. सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा द्वारा बोधगया के बोधि वृक्ष का क़लम श्रीलंका के अनुराधापुर में ले जाकर लगाया गया। ३. मेक्सिको के ओक्साका में है। तमाल जाति के इस वृक्ष के काण्ड की परिधि एक सौ दस फुट है। ४. बाँस जाति के कुछ वृक्ष प्रति दिन छत्तीस इंच बढ़ते हैं। ५. पेंसिलवेनिया के जूनियाटा नदी के तट पर स्थित एक वृक्ष एक सौ एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 188, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

भरपूर चॉकलेट, भरपूर मौज-मज़े
एक चहेता हर एक के लिए
दूध भरा
मक्खन भरा
चॉकलेट वाला
न्यूट्रीन
Eclairs
चॉकलेट
कैरॅमल बाहर, चॉकलेट भीतर
मीठे-मीठे चॉकलेट से खुश हो जाओ दुगना!
nutrine Eclairs
nutrine
भारत में सबसे ज़्यादा बिकनेवाला चॉकलेट
CLARION/NC/8340
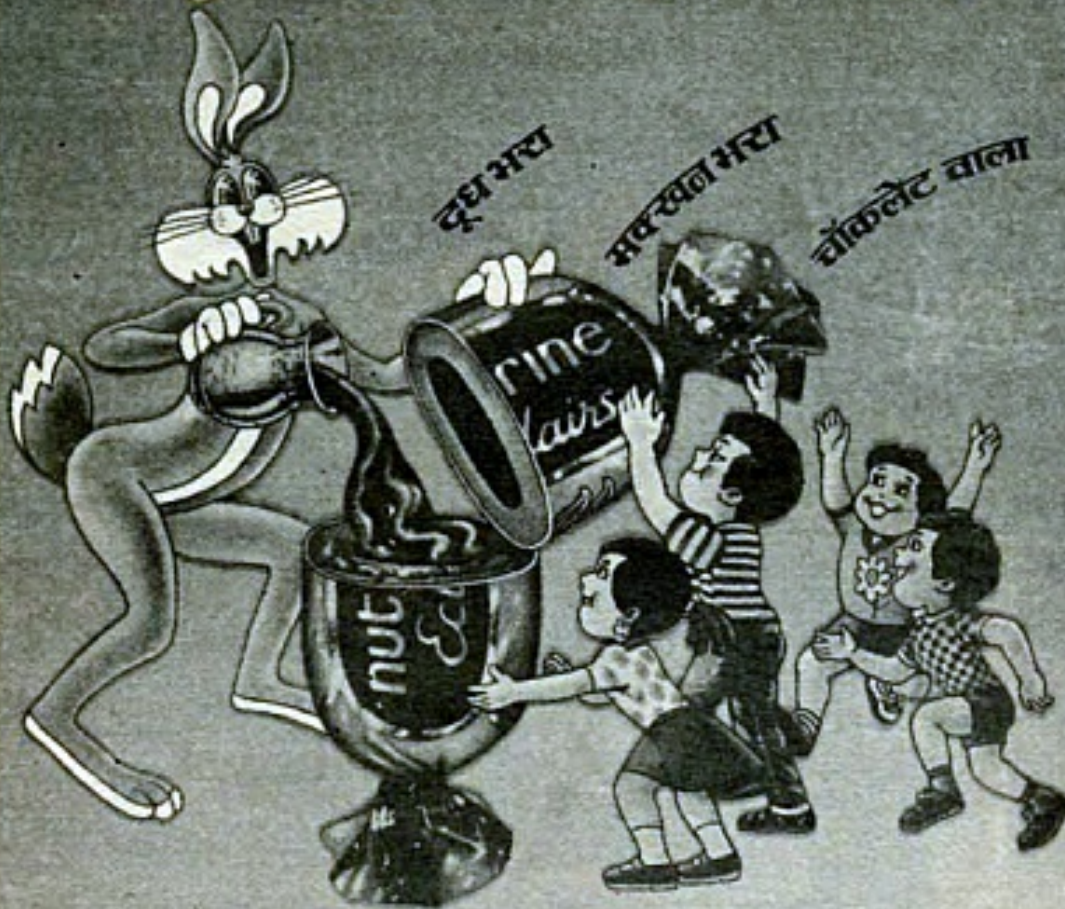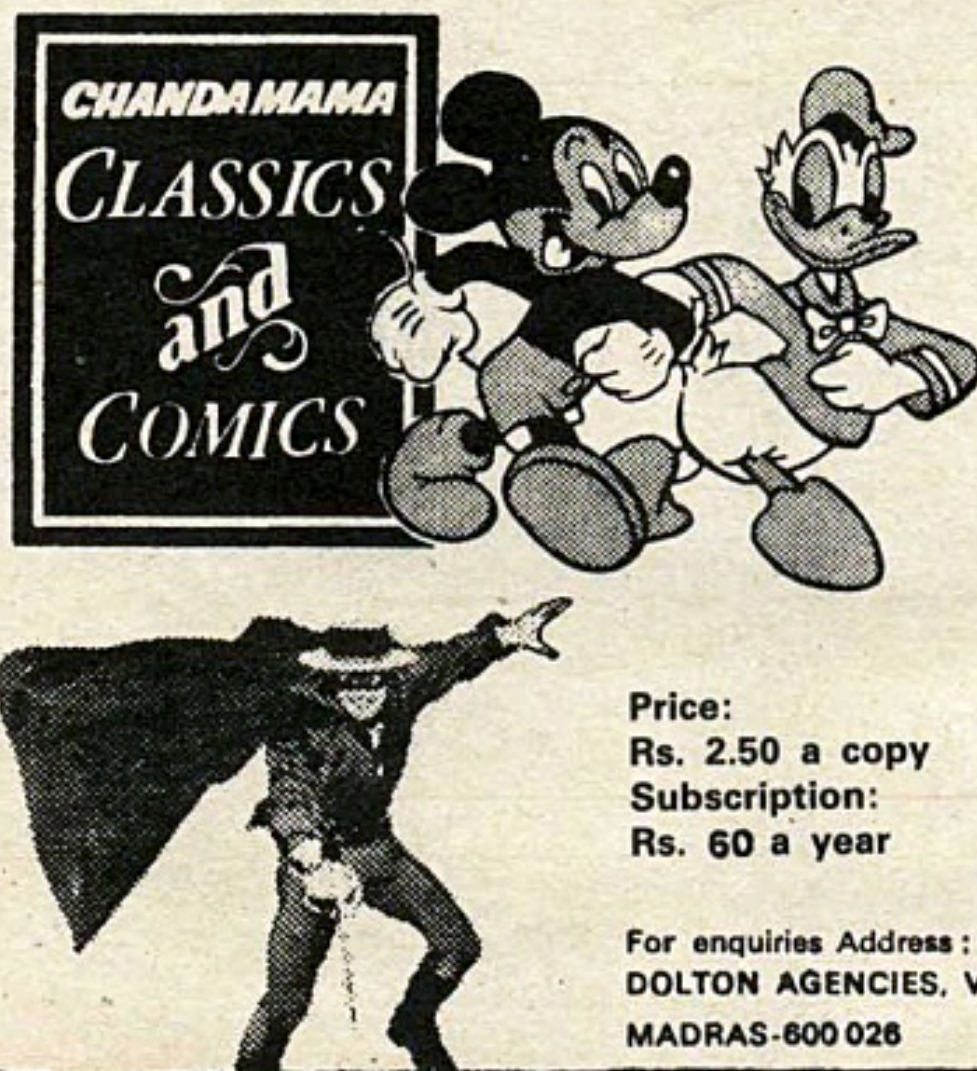
निःशुल्क प्रवेश

चन्दामामा कॅमल

रंग प्रतियोगिता

पुरस्कार जीतिए

कॅमल

पहला इनाम (१) रु. १५/-
दूसरा इनाम (२) रु. १०/-
तीसरा इनाम (१०) रु. ५/-
१० प्रमाणपत्र

इस प्रतियोगिता में १२ वर्ष की उम्र तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं. ऊपर दिये हुए चित्र में पूरे तौर से कॅमल कलर्स रंग भरिए और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये :

चंदामामा, पो. बॉ. नं. ६६२८, कुलाबा, बम्बई ४०० ००५.

जजों का निर्णय अंतिम और सभी के लिए मान्य होगा. इस विषय में कोई पत्र - व्यवहार नहीं किया जायेगा.

कृपया कूपन केवल अंग्रेजी में भरिए.

Name: .... Age: ....

Address: ....

....

प्रवेशिकाएं 31-1-1984 से पहले पहले भेजी जायें.

CONTEST NO34

LIKE TO FLY INTO THE EXCITING WORLD OF ADVENTURE AND HUMOUR?
DOLTON
SUPER COMICS
CAN TAKE YOU THERE
EVERY FORTNIGHT!
IT COSTS ONLY Rs.2.00 A COPY – EVIDENTLY THE MOST EASILY AVAILABLE COMICS MAGAZINE YOU'VE EVER READ:
ITS 32 FULL COLOUR PAGES TAKE YOU THROUGH MYSTERY AND EXCITEMENT TO A RENDEZVOUS WITH THE SUPER HEROES —
SUPERMAN
&
BATMAN
DOLTON COMICS
DC
DOLTON PUBLICATIONS
MADRAS 600 026